अक्टूबर क्रान्ति की मशाल

H
320.5315
B 488 O

H
320.5315
B4880

बिगुल पुस्तिका 4

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

अक्टूबर क्रान्ति की मशाल

(मजदूर अखबार 'नई समाजवादी क्रान्ति का उद्घोषक बिगुल'
में प्रकाशित लेखों का एक संकलन)

राहुल फाउण्डेशन
69, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज, लखनऊ-226006

व्यापार अथवा अन्य किसी भी रूप में आर्थिक लाभ के प्रयोजन के अतिरिक्त इस पुस्तक की सामग्री का जनता के हित में कहीं भी इस्तेमाल करने की स्वतंत्रता है। हमारा केवल यह अनुरोध होगा कि आप हमें इसकी सूचना दे दें।

Library IIAS, Shimla
H 320.531 5 B 488 O
00122532

मूल्य : रु. 12.00

प्रथम संस्करण : जनवरी 2002

प्रकाशक : राहुल फाउण्डेशन
69, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज, लखनऊ-226006

लेजर टाइपसेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन

मुद्रक : वाणी ग्राफिक्स, अलीगंज, लखनऊ

October Kranti ki Mashal
Collection of Articles published in 'Bigul'

ISBN 81-87728-10-8

प्रस्तावना

1917 की महान अक्टूबर क्रान्तिं विश्व इतिहास के एक नये युग के आगमन की घोषणा थी—सर्वहारा क्रान्तियों के युग के आगमन की घोषणा। यह पूरी दुनिया के ज्ञात इतिहास की सबसे युगप्रवर्तक घटनाओं में से एक थी। इस क्रान्ति में मेहनतकश अवाम ने मजदूर वर्ग के नेतृत्व में रूस में पहली बार पूंजीपतियों और सभी सम्पत्तिवान लुटेरों की राज्यसत्ता को उखाड़ फेंका और लेनिन और उनकी बोल्शेविक पार्टी के नेतृत्व में सर्वहारा राज्यसत्ता की स्थापना की।

यह सही है कि अक्टूबर क्रान्ति ने हर प्रकार के शोषण-उत्पीड़न-असमानता को खत्म कर एक सचमुच का मानवीय समाज बनाने की दिशा में जो यात्रा शुरू की थी वह 1953 में महान स्तालिन की मृत्यु हो जाने के बाद आगे जारी नहीं रह सकी और पूंजीवादी ताकतों ने फिर से अपनी सत्ता बहाल कर ली लेकिन इस क्रान्ति का ऐतिहासिक महत्व और उसका ऐतिहासिक संवेग आज भी बरकरार है। समाजवाद की विश्वव्यापी फौरी पराजय का यह अर्थ नहीं कि सर्वहारा क्रान्ति का युग बीत गया। सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच विश्व-ऐतिहासिक महासमर का अभी पहला चक्र पूरा हुआ है। नया चक्र अब शुरू हुआ है। पूरी दुनिया में अक्टूबर क्रान्ति के नये संस्करणों का निर्माण अवश्यम्भावी है। अक्टूबर क्रान्ति की हवायें पूरी तरह मरी तो कभी नहीं थीं। पूरे भरोसे के साथ कहा जा सकता है कि आने वाले दिनों में वे फिर प्रचण्ड चक्रवाती तूफान बनकर उठेंगी। इक्कीसवीं सदी भूकम्पकारी, उथल-पुथल की सदी होगी, यह हमारा गहरा विश्वास है।

यह विश्वास एक विज्ञानसम्मत आस्था बनकर मेहनतकश अवाम की संकल्पशक्ति को नये सिरे से जगा सके, इसके लिए जरूरी है कि अक्टूबर क्रान्ति के इतिहास और उसके मार्गदर्शक सिद्धान्त का गहराई से अध्ययन किया जाये। साम्राज्यवाद के मौजूदा दौर में मजदूर क्रान्तियों का स्वरूप और रास्ता क्या होगा यह तय करना एक जरूरी कार्यभार है। बिगुल पुस्तिकाओं की शृंखला की यह कड़ी इसी दिशा में एक कोशिश है। पुस्तिका में प्रकाशित लेख बिगुल के विभिन्न अंकों में प्रकाशित हो चुके हैं। हमारा विश्वास है कि इस पुस्तिका की सामग्री अपने देश की जमीन पर मौलिक ढंग से अक्टूबर क्रान्ति के नये संस्करण का निर्माण करने की दिशा में उपयोगी साबित होंगी।

—सम्पादक, 'बिगुल'

अनुक्रम

अक्टूबर क्रान्ति की मशाल बुझी नहीं है ! बुझ नहीं सकती !

अक्टूबर क्रान्ति का नया संस्करण ही मुक्ति का एकमात्र रास्ता है !

अक्टूबर की हवाएं मरी नहीं हैं ! वे फिर उठेंगी भयंकर तूफ़ान बनकर !

अक्टूबर क्रान्ति की शिक्षाएं और हमारा समय, हमारा देश

आग्नेय अक्टूबर

अक्टूबर क्रान्ति की मशाल बुझी नहीं है ! बुझ नहीं सकती !

अब से ठीक 79 वर्ष पहले, 1917 में (पुराने कैलेण्डर के अनुसार अक्टूबर में और नये कैलेण्डर के अनुसार नवम्बर में) मेहनतकश अवाम ने, क्रान्तिकारी मजदूर वर्ग की अगुवाई में, रूस में पहली बार पूंजीपतियों और सभी सम्पत्तिवान लुटेरों की राज्यसत्ता को बलपूर्वक उखाड़ फेंका था और पहली बार महान लेनिन और उनकी बोल्शेविक कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में सर्वहारा राज्यसत्ता की—सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की स्थापना की थी।

मानव समाज के वर्गों में बंटने के बाद के हजारों वर्षों के इतिहास में यह पहली ऐसी क्रान्ति थी जिसमें राज्यसत्ता एक शोषक वर्ग से दूसरे, नये शोषक वर्ग के हाथ में नहीं बल्कि मेहनतकश शोषित-उत्पीड़ित जनता के हाथों में गई थी।

इतिहास की पहली सचेतन संगठित क्रान्ति जिसने पहली बार उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व का नाश कर दिया और समता के साथ तरक्की की रफ्तार का नया रिकार्ड कायम किया

दबे-कुचले लोगों ने पूरे मानव इतिहास में बगावतें तो अनगिनत बार की थीं लेकिन पेरिस कम्यून (1871 में पेरिस के मजदूरों द्वारा सम्पन्न क्रान्ति और पहली सर्वहारा सत्ता की स्थापना, जिसे 72 दिनों बाद फ्रांसीसी पूंजीपतियों ने पूरे यूरोप के प्रतिक्रियावादियों की मदद से कुचल दिया) की शुरुआती कोशिश के बाद, अक्टूबर क्रान्ति मेहनतकश वर्गों की पहली योजनाबद्ध, सचेतन तौर पर संगठित क्रान्ति थी जिसके पीछे एक दर्शन था, एक विचारधारा थी, एक कार्यक्रम था, एक युद्धनीति थी और एक ऐसे रास्ते की रूपरेखा भी थी जिससे होकर आगे बढ़ते हुए एक नये समाज की रचना करनी थी।

निजी सम्पत्ति और वर्ग-शोषण के अस्तित्व में आने के लगभग चार हजार वर्षों बाद पहली बार मेहनतकशों की सोवियत सत्ता ने अबतक असम्भव और महज किताबी माने जाने वाली बात को सम्भव बनाकर वास्तविकता की जमीन पर उतार दिया। लेनिन

और फिर स्तालिन के नेतृत्व वाली सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में स्थापित सर्वहारा सत्ता—सर्वहारा अधिनायकत्व ने अबतक सम्पत्ति का अपहरण करने वालों की ही सम्पत्ति का अपहरण कर लिया और फिर ज्ञात इतिहास में पहली बार उत्पादन के साधनों—यानी कल-कारखानों, खेतों, संचार-यातायात के साधनों आदि पर निजी स्वामित्व का खात्मा कर दिया गया। इस सोच को गलत ही नहीं बल्कि उल्टा साबित कर दिया गया कि खेतों और कारखानों पर निजी मालिकाने के बिना समाज का कामकाज चल ही नहीं सकता। कामकाज चला नहीं नहीं बल्कि दौड़ा, और अद्भुत, चमत्कारी रफ्तार से दौड़ा! उत्पादन और भौतिक प्रगति के सभी पुराने रिकार्ड टूट गये और मानदण्ड छोटे पड़ गये!

आज दुनिया भर का पूंजीवादी प्रेस समाजवाद पर चाहे जितना कीचड़ उछाल ले, तमाम झूठ-फरेब के बावजूद इस सच्चाई को उसे आज से पचास वर्षों पहले ही स्वीकारने के लिए मजबूर होना पड़ा था कि 1917 के बाद सोवियत संघ में वैज्ञानिक-मशीनी तरक्की और आम मेहनतकशों की चेतना, हुनर, शिक्षा, संस्कृति वगैरह की तरक्की की रफ्तार इतनी तेज थी कि जो चीजें हासिल करने में पश्चिमी यूरोप के देशों को करीब दो सौ वर्षों का समय लगा वह उसने सिर्फ 20-25 वर्षों में हासिल कर लिया। फ्रांसीसी क्रान्ति और इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति के बाद पश्चिमी दुनिया में जो भी तरक्की पूंजीवादी रास्ते से हासिल हुई थी, उसके साथ ही धनी-गरीब के बीच की खाई भी तेज रफ्तार से बढ़ती चली गई थी और पूंजीपतियों के जनवाद की यह असलियत सामने आती चली गई थी कि वह धनिकों के बीच की स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व है जबकि गरीबों-मेहनतकशों के ऊपर तानाशाही है। यह स्वाभाविक था, क्योंकि पश्चिम में सारी तरक्की जनता की खुशहाली और न्याय के लिए नहीं बल्कि नई-नई मशीनों द्वारा मेहनतकशों को निचोड़कर ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए पूंजीपतियों में लगी होड़ का नतीजा थी। दूसरी ओर सोवियत संघ में निजी मालिकाने के बलपूर्वक खात्मे के बाद मुनाफाखोरी और लूट के मूल एवं मुख्य आधार को खत्म करके मेहनतकश जनता की राज्यसत्ता ने आम लोगों को पहली बार अपनी तरक्की के लिए उत्पादन का अवसर दिया तथा साथ ही सांस्कृतिक-शैक्षिक तरक्की और जिन्दगी की हर तरह की बेहतरी के लिए भी खुद अपनी पहल पर काम करने का मौका दिया।

इसी का नतीजा था कि समाजवादी विकास ने जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने और पूरे सोवियत संघ को उन्नत औद्योगिक देशों की कतार में ला खड़ा करने के साथ ही समाज में ज्यादा से ज्यादा समानता स्थापित की और हजारों वर्षों से कायम विशेषाधिकारों, भौतिक-सांस्कृतिक अन्तरों और उनकी जमीन के मौजूद रहने के बावजूद पूंजीपतियों, भूस्वामियों, नौकरशाहों, सट्टेबाजों, व्यापारियों आदि सभी तरह के परोपजीवी वर्गों के प्रत्यक्ष शोषण को दो दशकों के भीतर ही समाप्त कर दिया। समाजवाद के रास्ते ने उद्योगों और खेतीबाड़ी की अभूतपूर्व तरक्की के साथ ही निःशुल्क एवं समान शिक्षा,

स्वास्थ्य, आवास आदि सुविधाओं को सर्वसुलभ बना दिया तथा बेरोजगारी का पूरी तरह खात्मा कर दिया। गौरतलब बात यह है कि उद्योगों पर समूची जनता का मालिकाना स्थापित करके (यानी मेहनतकशों की राज्यसत्ता के अन्तर्गत राष्ट्रीकरण करके) और खेती का सामूहिकीकरण करके (यानी खेतों में काम करने वाले सभी किसानों के सामूहिक मालिकाने वाले बड़े फार्म स्थापित करके) सोवियत संघ ने ऊपर गिनाई गईं उपलब्धियां उस समय हासिल कीं जब पूरी पूंजीवादी दुनिया महामन्दी (1930-40 के बीच) के भंवरों में पछाड़ खा रही थी।

स्तालिन के भूत से आज भी क्यों डरते हैं पूंजीपति और क्यों उन्हें आज भी गाली देते हैं उनके भाड़े के टट्टू?

समाजवाद के महान निर्माता स्तालिन के बारे में आज पूंजीवादी अखबारों के दो कौड़ी के भाड़े के टट्टू भी तरह-तरह के झूठ गढ़ रहे हैं। हम उन्हें सिर्फ याद दिलाना चाहते हैं कि कभी पूंजीवादी दुनिया के एच.जी.वेल्स, रोम्यां रोलां, बर्नार्ड शॉ, बर्ट्रेण्ड रसेल, चार्ली चैप्लिन आदि और भारत के लाला लाजपत राय, गणेश शंकर विद्यार्थी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, नेहरू, प्रेमचन्द आदि जैसे महापुरुषों ने भी स्तालिन और सोवियत संघ की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। हम यह भी याद दिलाना चाहते हैं कि साम्राज्यवादी कुत्तों की गलाकाटू होड़ ने जब दूसरे महायुद्ध को और फासिस्ट-नात्सी भस्मासुरों को जन्म दिया तो हिटलर की सिर्फ 54 डिवीजनों ने लगभग पूरे यूरोप को रौंदकर विश्वविजय का खतरा पैदा कर दिया था। उस समय उसकी 200 डिवीजनों का मुकाबला करते हुए सोवियत जनता और लाल सेना ने हिटलर की पूरी सत्ता को ही तबाह कर डाला था। इसमें दो करोड़ सोवियत जनता ने अपनी बेमिसाल कुर्बानी स्तालिन की बहुप्रचारित "तानाशाही" के डर से नहीं बल्कि समाजवाद और विश्व मानवता की हिफाजत के लिए दी थी। उस समय तो रूजवेल्ट, चर्चिल और दगॉल भी स्तालिन की बड़ाई कर रहे थे और पीछे-पीछे चल रहे थे तथा पश्चिमी अखबार उन्हें "चाचा स्तालिन" ('अंकल जो') कह रहे थे, पर विश्वयुद्ध समाप्त होते ही स्तालिन को फिर तानाशाह कहा जाने लगा और सोवियत संघ नामक "शैतानी राज्य" को तबाह कर दिये जाने का आह्वान किया जाने लगा। यह है पूंजीवाद का दोगलापन, जो स्वयंसिद्ध है।

पर दुनिया के पूंजीवादी इतिहासकार आज भी इस तथ्य से इंकार नहीं कर पाते कि अक्टूबर क्रान्ति के तोपों के धमाकों ने दुनिया भर के मेहनतकशों को पूंजी की सत्ता के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा देने के साथ ही एशिया, अफ्रीका और लातिन अमेरिका की जनता के उपनिवेशवाद विरोधी संघर्षों को भी जबरदस्त उछाल देने का काम किया। सोवियत संघ लगातार औपनिवेशिक गुलामी के विरुद्ध लड़ने वाले क्रान्तिकारियों को और आम जनता को प्रेरणा देता रहा और यथासम्भव मदद भी। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद पूर्वी यूरोप में भी सर्वहारा सत्ताएं स्थापित हुईं और चीन में माओ और कम्युनिस्ट पार्टी

के नेतृत्व में हुई नई जनवादी क्रान्ति ने अक्टूबर क्रान्ति के बाद एक और, नया मील का पत्थर कायम किया। शक्तिशाली समाजवादी खेमे की मौजूदगी ने एशिया, अफ्रीका, लातिन अमेरिकी देशों की जनता पर कायम औपनिवेशिक और नवऔपनिवेशिक शिंकजे को ढीला करने में भी अहम भूमिका निभाई।

पर इतिहास कभी भी सीधी रेखा में आगे नहीं बढ़ता। यह आती-जाती लहरों के रूप में, ज्वार और भाटे के रूप में आगे बढ़ता है, सर्पिल रास्तों से होकर, अनेकों मोड़ों और घुमावों से होकर आगे बढ़ता है।

समाजवाद की फिलहाली हार के बुनियादी कारण क्या हैं? यह जानना बेहद जरूरी है!

समाजवादी समाज पूरी तरह वर्गविहीन, शोषणविहीन समाज नहीं होता, बल्कि इसकी शुरुआती अवस्था होता है। वह पूंजीवाद और कम्युनिज्म के बीच का—वर्ग समाज और वर्गविहीन समाज के बीच का काल होता है; कम्युनिज्म की सिर्फ प्रथम अवस्था होता है। मेहनतकश वर्ग इस दौरान बलपूर्वक सम्पत्तिवान, परजीवी वर्गों पर शासन कायम करके उत्पादन के साधनों पर से उनका स्वामित्व छीन लेता है; पर ये पुराने शोषक-शासक अपनी उसी लुटेरी मानसिकता और अपने "खोये हुए स्वर्ग" को फिर से पाने की चाहत के साथ समाज में मौजूद होते हैं। इसके साथ ही छोटे पैमाने पर (गांव के मंझोले व छोटे किसानों, छोटे उद्यमियों-कारोबारियों आदि के बीच) पूंजीवादी किस्म का उत्पादन समाजवाद के शुरुआती समयों में लम्बी अवधि तक मौजूद रहता है, निजी स्वामित्व छोटे पैमाने पर मौजूद रहता है और आम जनता के एक अच्छे-खासे हिस्से के भीतर धनी बनने की और मुनाफा कमाने की पुरानी बीमारी भी मौजूद रहती है। यह छोटे पैमाने का पूंजीवादी उत्पादन नये-नये पूंजीवादी तत्वों और मानसिकता को समाजवाद के भीतर नये सिरे से पैदा भी करता रहता है। इसके अलावा समाजवादी समाज में भी शारीरिक श्रम और मानसिक श्रम करने वालों के बीच, कारखानों में काम करने वाले और खेतों में काम करने वालों के बीच तथा गांव में रहने वालों और शहर में रहने वालों के बीच का अन्तर भी मौजूद रहता है। इसके अतिरिक्त, समाजवाद के बहुत आगे की मंजिलों में ही यह सम्भव हो सकता है कि लोग क्षमता मुताबिक काम करते हैं और जरूरत मुताबिक पाते है। शुरू में तो लम्बे समय तक यही हो सकता है कि लोग जितना श्रम करें उसी के हिसाब से उन्हें मजूरी मिले। अब चूंकि लोगों की श्रम करने की प्राकृतिक क्षमता एक नहीं होती, इस कारण से भी समाजवाद के शुरुआती लम्बे समय में असमानता पैदा होने का एक आधार मौजूद रहता है।

कुल मतलब यह कि उत्पादन के साधनों पर पूरे समाज का मालिकाना कायम करना शोषण और असमानता के खात्मे का सबसे जरूरी पहला कदम है, पर यही सब कुछ नहीं। इसके बाद भी समाज में असमानता और पूंजीवाद के उतने किस्म के

उत्पादन केन्द्र और पालन-पोषण केन्द्र मौजूद रहते हैं, जो ऊपर गिनाये गये हैं। इन्ही कारणों से समाजवादी समाज के भीतर भी नये किस्म के पूंजीवादी तत्व मजबूत होते जाते हैं और समय रहते इन खर-पतवारों को नष्ट करके जमीन की अच्छी तरह निराई-गुड़ाई और कीटनाशकों का छिड़काव न किया जाये तो यह समाजवाद की पूरी फसल तबाह कर डालते हैं। ये नये पूंजीवादी तत्व कम्युनिस्ट पार्टी ओर सर्वहारा राज्यसत्ता पर काबिज हो जाते हैं और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना हो जाती है।

1953 में स्तालिन की मृत्यु के बाद सोवियत संघ में यही हुआ। ख्रुश्चेव के नेतृत्व में वहां एक नये किस्म का पूंजीवाद बहाल हो गया—"समाजवादी" मुखौटे और नकली लाल झण्डे वाला, सरकारी या राजकीय पूंजीवाद—बहुत कुछ हमारे देश के 'पब्लिक सेक्टर' जैसा! 1990 में यह मुखौटा भी गिर गया और महान अक्टूबर क्रान्ति के देश में एक बार फिर खुला पूंजीवाद बहाल हो गया।

सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति ने दिखलायी नई राह!

दरअसल महान स्तालिन भी समाजवाद के भीतर मौजूद और नये सिरे से पनपने वाले बुर्जुआ तत्वों को पहचान नहीं सके, उनके द्वारा समाजवाद की हार के खतरे को देख नहीं सके और उनके विरुद्ध सतत् क्रान्ति चलाते हुए कम्युनिज्म की दिशा में आगे बढ़ने की राह नहीं निकाल सके। इस दिशा में महान लेनिन ने सोचना जरूर शुरू किया था, पर वक्त ने उन्हें मौका नहीं दिया और 1924 में उनका निधन हो गया। स्तालिन की गलतियों ओर चीन के समाजवादी प्रयोगों से सबक लेकर माओ त्से-तुङ ने इस महान काम को अंजाम दिया और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति का वह प्रयोग किया जो विश्व सर्वहारा क्रान्ति के डेढ़ सौ वर्षों के इतिहास में पेरिस कम्यून और अक्टूबर क्रान्ति के बाद कायम तीसरा कीर्ति स्तम्भ है। हालाकि चीन में भी माओ की मृत्यु के बाद पूंजीवादी तत्व सत्ता पर काबिज हो गये और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना हो गई, पर इससे सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति का महत्व कम नहीं होता क्योंकि पहली बार इस महान क्रान्ति ने पूंजीवादी पुनर्स्थापना को रोकने, पूंजीवादी तत्वों को लगातार कमजोर करते जाने और वर्गविहीन समाज की दिशा में आगे बढ़ते जाने की ठोस, स्पष्ट राह बतलाई थी।

मेहनतकश अवाम अगर इतिहास से शिक्षा लेकर क्रान्ति के विज्ञान की समझ नहीं हासिल करेगा तो पूंजीपाति वर्ग और उसके भोंपुओं के भ्रामक प्रचारों से मुक्त नहीं हो पायेगा और यह मानता रहेगा कि समाजवाद की हार हो गई है, वह असफल सिद्ध हो गई। पूंजीवादी समाज की विपत्तियों से तंग, परेशान-बदहाल होकर वह समय-समय पर विद्रोह भी करता रहेगा, लेकिन समाजवाद की अन्तिम जीत में विश्वास और क्रान्ति के विज्ञान की समझ के अभाव में वह कभी भी पूंजीवाद का नाश नहीं कर सकेगा क्योंकि पूंजीवाद का एकमात्र विकल्प समाजवाद ही है।

अमर नहीं है पूंजीवाद! इसे मरना ही है!

हमें इस बात को अच्छी तरह से समझना होगा कि अतीत में भी क्रान्तियों के शुरुआती संस्करण असफल होते रहे हैं। सात-आठ सौ वर्षों तक कई दास विद्रोह कुचल दिये गये, तब कहीं जाकर दास प्रथा के युग का पूरी दुनिया से खात्मा हो सका था। सामन्तवर्ग से संघर्ष करते हुए निर्णायक विजय हासिल करने में और पूंजीवादी सामाजिक ढांचे का निर्माण करने में पूंजीपति वर्ग को तकरीबन चार सौ वर्षों का समय लग गया। फिर इसमें निराश या भग्नहृदय होने की भला क्या बात हो सकती है कि समाजवादी क्रान्ति फिलहाल कुछ समय के लिए सदियों से जड़ जमाये पूंजीवाद से हार गई है और सर्वहारा वर्ग को फौरी तौर पर पीछे हट जाना पड़ा है! और फिर हमें यह भी तो याद रखना होगा कि समाजवादी क्रान्ति मानव इतिहास की सर्वाधिक व्यापक, गहरी और बुनियादी क्रान्ति है, क्योंकि पहले की सभी क्रान्तियों ने एक पुरानी पड़ चुकी शोषण की व्यवस्था की जगह एक नये प्रकार की शोषण की व्यवस्था की स्थापना की जबकि समाजवादी क्रान्ति का लक्ष्य सभी वर्ग व्यवस्थाओं का, हर तरह के शोषण का और हर तरह की असमानता का नाश करना है। राज्यसत्ता पर सर्वहारा वर्ग के काबिज होने के बाद लम्बे समय के संघर्ष में ही यह सम्भव हो सकता है और इस लम्बे संक्रमण काल के दौरान एक से अधिक बार सर्वहारा वर्ग को हार का सामना भी करना पड़ सकता है।

हमें यह बात ठीक से समझ लेनी होगी कि प्रकृति और समाज की कोई भी चीज, कोई भी ऐतिहासिक युग और कोई भी सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था अमर नहीं होती। पूंजीवाद भी अजर-अमर नहीं है। दास प्रथा और सामन्त प्रथा की तरह पूंजी की उजरती गुलामी की प्रथा भी आज मानव समाज के पैरों की बेड़ी बन चुकी है जो उसके आगे नहीं बढ़ने दे रही है। अतः, निश्चित ही, मानवता इन बेड़ियों को तोड़ फेंकेगी।

समूचे विश्व पूंजीवाद और इसके शीर्ष पर आसीन साम्राज्यवादी देशों तक की अर्थव्यवस्था आज एक लम्बी मन्दी और ठहराव के ऐसे ढांचागत संकट से ग्रस्त है जैसा पहले कभी नहीं देखा गया था। हालत बताते हैं कि इसकी मृत्यु अब सुदूर भविष्य की बात नहीं है। तबतक यह केवल घिसट-घिसटकर सांसे गिन सकता है जबतक कि मेहनतकश अवाम फिर से संगठित होकर इसके नाश की लड़ाई न छेड़ दे।

हालांकि पूरी दुनिया में अभी क्रान्ति की लहर पर प्रतिक्रान्ति की लहर हावी है, पर दुनिया के अलग-अलग कोनों से एक नये उभार के पूर्वसंकेत मिलने शुरू हो चुके है। रूस, भूतपूर्व सोवियत संघ के दूसरे घटक देशों में, और पूर्वी यूरोप के देशों में मेहनतकश जनता ने नकली समाजवाद का गन्दा चेहरा तो पहले ही देख लिया था, अब वह पश्चिमी दुनिया के "स्वर्ग" की असलियत भी जान चुकी है। विश्व पूंजीवादी व्यवस्था के साथ मिलते ही इन देशों की कमजोर पूंजीवादी अर्थव्यवस्था गम्भीर संकट के भंवर में जा फंसी है तथा बेरोजगारी, महंगाई, अभाव और भ्रष्टाचार की मार झेलती और

मुट्ठी भर लोगों के धनी होने की कीमत अपनी कंगाली से चुकाती जनता एक बार फिर सड़कों पर उतर चुकी है। उसके एक अच्छे-खासे हिस्से के हाथ में आज लेनिन और स्तालिन के पोस्टर और लाल परचम हैं और लबों पर सच्चे समाजवाद की बहाली के नारे हैं। वहां कई क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट संगठन नई अक्टूबर क्रान्ति की रणनीति पर बहसें चला रहे हैं और पश्चिम के पूंजीवादी अखबार भी इन देशों में "बोल्शेविक पुनरुत्थान" की खबरें छाप रहे हैं। माओ के देश की जनता भी सोई नहीं हैं। वहां देङ सियाओं पिङ के "बाजार समाजवाद" नामधारी पूंजीवाद के खिलाफ किसानों ओर युवाओं की बगावतें हो रही हैं और बदनाम करने की तमाम कोशिशों के बावजूद जनता महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के दिनों को याद कर रही है!

जाहिर है कि सन्नाटा टूटने लगा है। मिट्टी में दबे अक्टूबर क्रान्ति के नये संस्करण के बीज अंकुरित होने लगे हैं।

लातिन अमेरिकी देशों में किसानों-मजदूरों के आन्दोलन और छापामार संघर्षों का नया सिलसिला शुरू हो चुका है। और अब एशिया भी जग रहा है। इण्डोनेशिया के ताजा जन-उभार से हुई शुरुआत की आहटें भारतीय उपमहाद्वीप तक में सुनाई पड़ रही हैं। भारत की जनता भी सोई नहीं रह सकती। नई आर्थिक नीतियों के अमल ने साम्राज्यवाद और देशी पूंजीवाद की लूट और लगातार बढ़ती मंहगाई-बेरोजगारी-असमानता और भ्रष्टाचार को जिन आखिरी हदों तक पहुंचा दिया है, वहां पहुंचना एक जागते ज्वालामुखी के दहाने पर पहुंचने के समान है।

जाहिरा तौर पर, भारतीय मेहनतकश अवाम को भी अपना ऐतिहासिक मिशन पूरा करने के लिए आगे कदम बढ़ाना होगा। यह पूरी दुनिया की तरह भारत में भी एक नये सर्वहारा पुनर्जागरण और नये सर्वहारा ज्ञानोदय का दौर है। आर्थिक नवउपनिवेशवाद के इस नये दौर में भारतीय सर्वहारा वर्ग और मेहनतकश जनता को साम्राज्यवाद और उसके जूनियर पार्टनर बने भारतीय पूंजीपति वर्ग की राज्यसत्ता को उखाड़कर पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली को ही नष्ट कर देना है तथा राज्यसत्ता उत्पादन और समाज के पूरे तंत्र पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लेना है। यही क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य के नारे का मतलब है। यही है भारत की नई समाजवादी क्रान्ति जो आज की नई परिस्थितियों के अनुरूप अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति का एक नया संस्करण है।

भारत के मेहनतकशों को अक्टूबर क्रान्ति के दिखाये मार्ग पर आगे बढ़ना होगा, नये सिरे से अपनी नई, नये ढंग की इंकलाबी पार्टी बनानी होगी और अपने देश की जमीन पर मौलिक ढंग से अक्टूबर क्रान्ति के नये संस्करण की आधारशिला स्थापित करनी होगी।

इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए जरूरी है कि हम दुनिया की पहली समाजवादी क्रान्ति के प्रयोग के सारतत्व को, उसके निचोड़ को, उसकी सबसे बुनियादी शिक्षाओं को गांठ बांध लें। वे क्या हैं?

अक्टूबर क्रान्ति की सबसे बुनियादी शिक्षाएं

1. सर्वहारा क्रान्ति की सबसे पहली जरूरत है सर्वहारा वर्ग की, पूरे देश के स्तर पर संगठित एक क्रान्तिकारी पार्टी। यह क्रान्तिकारी पार्टी लेनिन के मार्गदर्शन में निर्मित बोल्शेविक पार्टी की तरह संघर्षों की आग में तपकर इस्पात बनी हो, पूंजीवाद की सशस्त्र सेना-पुलिस से लैस राज्यसत्ता से लोहा लेने में सक्षम हो (न कि महज चुनावबाजी और ट्रेडयूनियनबाजी का धन्धा करती हो), औद्योगिक सर्वहारा और ग्रामीण सर्वहारा में ही नहीं बल्कि बहुसंख्यक गरीब व परेशानहाल मंझोले किसानों में भी इसकी गहरी पैठ हो और यह अपने देश की परिस्थितियों की समझ के आधार पर क्रान्ति का कार्यक्रम और रास्ता तय करने में सक्षम हो, तभी यह अक्टूबर क्रान्ति का नया संस्करण तैयार कर सकती है।

2. जब हम अक्टूबर क्रान्ति के पहले के रूस में करीब बीस वर्षों तक जारी, ऐसी पार्टी के निर्माण और गठन की प्रक्रिया पर निगाह डालते हैं तो यह सच्चाई दिन की रोशनी की तरह साफ हो जाती है कि कठिन विचारधारात्मक संघर्ष, अटल विचारधारात्मक दृढ़ता और गहरी विचारधारात्मक समझ के बिना कोई सच्ची सर्वहारा पार्टी क्रान्ति करना तो दूर, गठित ही नहीं हो सकती और यदि गठित हो भी गई तो जल्दी ही बिखर जायेगी। लेनिन और उनके साथी बोल्शेविकों ने एकदम अलग-थलग पड़ जाने का खतरा मोल लेते हुए भी विचारधारा के प्रश्न पर कोई समझौता नहीं किया और मार्क्सवाद की क्रान्तिकारी विचारधारा में किसी भी तरह की मिलावट की मेन्शेविकों और कार्ल काउत्स्की के चेलों की साजिशों को एकदम से खारिज कर दिया। उन्होंने पार्टी को कभी भी चवन्निया मेम्बरी वाली महज चुनावबाज, यूनियनबाज, धन्धेबाज संगठन नहीं बनने दिया। दांवपेंच के रूप में लेनिन की पार्टी ने पूंजीवादी चुनावों और संसद का भी इस्तेमाल किया और ट्रेड यूनियनों में काम करते हुए आर्थिक संघर्ष भी लगातार चलाये तथा जनता को जगाने के लिए विभिन्न प्रकार की राजनीतिक सुधारपरक कार्रवाईयां भी कीं, पर पार्टी ने इस बात को कभी नहीं भुलाया कि बिना बल प्रयोग और हिंसा के, महज चुनावों के जरिए शोषक वर्गों से सत्ता छीनी नहीं जा सकती। वे पूंजीवादी राज्यसत्ता की सैन्य शक्ति और दमनतंत्र को उखाड़ फेंकने के लिए क्रान्तिकारी तैयारी लगातार करते रहे और एक बार फिर अक्टूबर क्रान्ति ने इस बात को सही साबित किया कि शोषक वर्ग कभी भी समझाने-बुझाने या अल्पमत-बहुमत से सत्ता नहीं सौंप सकते। अक्टूबर क्रान्ति की इस शिक्षा को याद रखने का मतलब यह है कि भारत का सर्वहारा वर्ग भी भा.क.पा., मा.क.पा., भा.क.पा. मा-ले (लिबरेशन ग्रुप) और ऐसे तमाम सुधारवादी, अर्थवादी, पूंजीवादी संसदवादी कम्युनिस्ट संगठनों के भ्रमजाल से बाहर आकर कम्युनिज्म के सही क्रान्तिकारी चरित्र को पहचाने। ये सभी मदारी मेन्शेविकों और काउत्स्कीपंथियों के उन सिद्धान्तों को ही नये लेबल लगाकर पेश करते हैं जिनके खिलाफ लगातार लड़कर बोल्शेविक पार्टी ने विचारधारात्मक दृढ़ता हासिल की और

तभी जाकर अक्टूबर क्रान्ति विजयी हो सकी।

3. साथ ही, अक्टूबर क्रान्ति और उसके नेता लेनिन की यह भी शिक्षा है कि क्रान्ति मुट्ठी भर समझदार और बहादुर क्रान्तिकारी नहीं, बल्कि व्यापक मेहनतकश जनता करती है। बहादुर और समझदार क्रान्तिकारी उस मेहनतकश जनता के हरावल दस्ता होते हैं जो जनता के रोजमर्रे की छोटी-छोटी लड़ाइयों में हिस्सा लेते हुए, ट्रेड यूनियनों (बुर्जुआ और प्रतिक्रियावादी ट्रेड यूनियनों में भी) भागीदारी करके आर्थिक मांगों पर और साथ ही राजनीतिक मांगों पर भी लड़ते हुए, सम्भव होने पर रणकौशल के तौर पर पूंजीवादी चुनाव और संसद में भी भागीदारी करते हुए जनता की राजनीतिक चेतना का ज्यादा से ज्यादा क्रान्तिकारीकरण करते हैं और उसे शासक वर्गों के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष के लिए तैयार करते हैं। अर्थवाद और संसदवाद के विरोध के नाम पर इन सभी रूपों-रणकौशलों को छोड़कर किसी भी रूप में महज हथियारबन्द कार्रवाइयों पर जोर देना वामपन्थी दुस्साहसवाद, या "अतिवामपन्थ" का मध्यमवर्गीय भटकाव है जिसका फायदा अन्ततोगत्वा भाकपा-माकपा ब्रांड नकली कम्युनिस्टों और पूंजीवादी सत्ता को ही मिलता है।

4. अक्टूबर क्रान्ति का निचोड़ निकालते हुए लेनिन ने सैकड़ों बार विचारधारात्मक दृढ़ता को स्पष्ट किया था और कहा था कि वर्ग संघर्ष और सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को कभी न भूलो। इनको भूलने का मतलब ही है पूंजीवादी जनवाद और शांतिपूर्ण संक्रमण के भ्रमजालों में जा फंसना और क्रान्ति के मार्ग को भूल जाना। हालात में चाहे जो भी बदलाव आ जाये, यदि पूंजीवाद पूंजीवाद है तो इसका अर्थ है कि राज्यसत्ता पूंजीपति वर्ग के हाथों में है, जिसे सिर्फ बलपूर्वक ही उखाड़ा जा सकता है और शोषक वर्गों को तबतक बलपूर्वक दबाये रखना पड़ेगा जबतक कि वर्ग के रूप में उनका अस्तित्व कायम रहेगा। आगे चलकर अक्टूबर क्रान्ति की इस शिक्षा को माओ ने महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के दौरान पुष्ट करने के साथ ही आगे विकसित किया और बताया कि सर्वहारा वर्ग राज्यसत्ता पर काबिज होने के बाद एक लम्बे समय तक यदि अपने अधिनायकत्व के अन्तर्गत सभी पूंजीवादी तत्वों के विरुद्ध सतत् क्रान्ति नहीं चलायेगा और पूंजीवादी मूल्यों-विचारों-संस्थाओं के विरुद्ध सतत् सांस्कृतिक क्रान्ति नहीं चलायेगा तो पूंजीवाद की पुनर्स्थापना अवश्यंम्भावी होगी।

अक्टूबर क्रान्ति की मशाल से पूंजीवादी जंगल राज में दावानल भड़काने के लिए इन शिक्षाओं को दिल में भली भांति बैठा लेना होगा, हर तरह के कठमुल्लेपन से मुक्त होकर आज की दुनिया और अपने देश की पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली, सामाजिक संरचना और राज्यतंत्र की सही समझ कायम करनी होगी और लगातार क्रान्तिकारी कार्रवाईयों में धीरज तथा मुस्तैदी के साथ सन्नद्ध होकर एक ऐसी क्रान्तिकारी पार्टी का पुनर्गठन करना होगा जो अक्टूबर क्रान्ति के नये संस्करण के निर्माण में सक्षम हो। ■

('बिगुल', नवम्बर-दिसम्बर 1996 में प्रकाशित)

अक्टूबर क्रान्ति का नया संस्करण ही मुक्ति का एकमात्र रास्ता है !

पूरी दुनिया के ज्ञात इतिहास की सबसे युग-प्रवर्तक घटनाओं में से एक—महान सोवियत समाजवादी क्रान्ति के बाद अस्सी साल का लम्बा समय बीत चुका है। इस बीच इतिहास वर्ग-संघर्ष की अपनी धुरी पर घूमता हुआ, एक चक्कर पूरा करके अगले चक्कर में प्रवेश कर रहा है।

इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर खड़े सर्वहारा वर्ग और मेहनतकश जन समुदाय ने पिछले करीब डेढ़ सौ सालों के दौरान के सबसे संगीन अधेरे से गुजरते हुए, पूंजीवाद के अत्यन्त उन्नत किस्म के शोषण और अत्यन्त संगठित किस्म के उत्पीड़न के खिलाफ, दुनिया के अलग-अलग कोनों में लगातार बगावतें खड़ी करके यह संकेत देना शुरू कर दिया है कि वह एक बार फिर विश्व पूंजीवाद के ताबूत में आखिरी कील ठोंकने के मंसूबे बांध रहा है। इतिहास का अन्त नहीं हुआ है। न तो पूंजीवाद की आज की जीत अन्तिम है और न ही समाजवाद की आज की हार। यह तो युद्ध का महज एक चक्र था। युद्ध का अगला, फैसलाकुन दौर तो अब लड़ा जायेगा!

पेरिस कम्यून (1871) के 72 दिनों की सर्वहारा सत्ता को यूरोप के पूंजीपतियों ने भले ही खून के दलदल में धंसा दिया, लेकिन दुनिया भर के मेहनतकशों के सामने यह सच्चाई आ ही गई कि पूंजीवाद को उखाड़कर मेहनतकशों की सत्ता कायम करना मुमकिन है। पेरिस कम्यून ने न सिर्फ कार्ल मार्क्स के वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धान्त को सही साबित किया बल्कि यह जरूरी शिक्षा भी दी कि सर्वहारा वर्ग पूंजीवादी राज्यसत्ता की बनी-बनाई मशीनरी पर कब्जा करने के बजाय उसे चकनाचूर करके अपनी राज्यसत्ता की मशीनरी का निर्माण खुद करेगा, तभी सफल हो सकेगा।

महान अक्टूबर क्रान्ति ने पेरिस कम्यून की नसीहत को अमली जामा पहनाने के साथ ही यह साबित कर दिखाया कि दुनिया की तमाम सम्पदा का उत्पादक मेहनतकश जनसमुदाय सर्वहारा वर्ग की अगुवाई में और उसके हिरावल दस्ते—एक सच्ची, इंकलाबी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में स्वयं शासन-सूत्र भी सम्हाल सकता है तथा अपने भाग्य और भविष्य का नियन्ता स्वयं बन सकता है।

महान अक्टूबर क्रान्ति ने यह साबित किया कि मालिक वर्गों को समझा-बुझाकर नहीं बल्कि उनकी सत्ता को बलपूर्वक उखाड़कर और उनपर बलपूर्वक अपनी सत्ता (सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व) कायम करके ही पूंजीवाद के जड़मूल से नाश की प्रक्रिया शुरू की जा सकती है और समाजवाद का निर्माण किया जा सकता है।

सदियों पुरानी धारणाओं को तोड़कर अक्टूबर क्रान्ति ने साबित कर दिया कि मेहनतकश राजकाज भी चला सकते हैं और निजी स्वामित्व को समाप्त करके प्रगति की चमत्कारी रफ्तार हासिल की जा सकती है

अक्टूबर क्रान्ति ने पूंजीपतियों और उनके पहले के तमाम मालिकों द्वारा हजारों वर्षों के दौरान जनता में कूट-कूटकर भरी गई इस बात को झूठा साबित किया कि मेहनतकश लोग सिर्फ काम कर सकते हैं, ''ज्ञानी'' लोगों की मदद से राजकाज चलाना तो मालिक लोगों का काम है। राज्यसत्ता पर काबिज होने के बाद महान लेनिन की बोल्शेविक पार्टी के नेतृत्व में सोवियत संघ के मजदूरों और मेहनतकश जनता ने न केवल पश्चिमी पूंजीवादी देशों के संयुक्त हमले का मुकाबला किया और उनके समर्थन से तोड़फोड़ की कार्रवाइयों में लगे देशी प्रतिक्रियावादियों को कुचल डाला, बल्कि भुखमरी और अकाल झेलकर भी साम्राज्यवादियों की आर्थिक नाकेबन्दी के सामने घुटने नहीं टेके और दिन-रात एक करके समाजवादी अर्थव्यवस्था का निर्माण किया। दस वर्षों के भीतर उत्पादन के साधनों पर निजी मालिकाने का खात्मा करके विविध रूपों में सामाजिक मालिकाना कायम कर दिया गया।

जल्दी ही, शुरुआती संकटों से उबरकर समाजवाद आगे को लम्बे डग भरने लगा। पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान, उद्योग और कृषि के क्षेत्र में उत्पादन-वृद्धि के ऐसे रिकार्ड कायम हुए जिन्होंने औद्योगिक क्रान्ति को भी मीलों पीछे छोड़ दिया। यह पूंजीवादी प्रचार एकदम झूठा साबित हुआ कि सर्वहारा वर्ग के राज्य के मालिकाने वाले कारखाने और सामूहिक खेती में उत्पादन का काम सुचारु रूप से चल ही नहीं सकता। काम न केवल सुचारु रूप से चला, बल्कि उत्पादन-वृद्धि की ऐसी रफ्तार दुनिया ने पहले कभी नहीं देखी थी। और यही नहीं, मजदूरों ने सामूहिक तौर पर मैनेजमेण्ट के कामों को भी ज्यादा-से-ज्यादा खुद सम्हाल लिया और खुद ही मशीनों में सुधार की नई-नई तरकीबें भी ईजाद करने लगे। समाजवाद के वैज्ञानिकों ने बिना पश्चिमी मदद के नये-नये आविष्कार करके सदियों पीछे छूट गये रूस को बीस वर्षों के भीतर पश्चिमी देशों की टक्कर में ला खड़ा किया।

केवल आर्थिक प्रगति और समानता के स्तर पर ही नहीं, सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर पर भी सोवियत संघ ने चमत्कारी उपलब्धियां हासिल कीं, जिन्हें पश्चिमी पूंजीवादी देशों के बुर्जुआ बुद्धिजीवियों और अखबारों को भी स्वीकार करना पड़ा। वेश्यावृत्ति और यौनरोगों का और बलात्कार जैसे अपराधों का पूरी तरह खात्मा हो गया। शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधा पूरी आबादी को समान स्तर पर मुहैया की जाने लगी। आम

मजदूरों के लिए तरह-तरह के नाटक, फिल्म व सांस्कृतिक कार्यक्रम तैयार किये जाने लगे और उन्हें मनोरंजन और घर-परिवार के लिए पर्याप्त समय भी मिलने लगा। ज्यादा से ज्यादा बड़े पैमाने पर स्त्रियां चूल्हे-चौखट की गुलामी से मुक्त होकर उत्पादन के अतिरिक्त अन्य सामाजिक गतिविधियों में भी हिस्सा लेने लगीं।

दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान पूरे यूरोप को रौंद रही हिटलर की नात्सी सेनाओं को सोवियत संघ की लाल सेना द्वारा धूल चटा देना खुद में एक चमत्कार था जो सिर्फ इसलिए सम्भव हो सका कि सोवियत जनता न सिर्फ हर कीमत पर समाजवाद की हिफाजत करना चाहती थी, बल्कि समाजवाद के घोर शत्रु फासिस्टों को तबाह कर देने के लिए कटिबद्ध थी। पूरी दुनिया को फासीवाद से मुक्ति दिलाने में सोवियत संघ ने अपने दो करोड़ लोगों की कुर्बानी देकर वीरता का एक नया महाकाव्य रच डाला।

अक्टूबर क्रान्ति के तोपों के धमाकों के साथ एशिया, अफ्रीका, लातिन अमेरिका के तमाम उपनिवेशों में साम्राज्यवाद-विरोधी मुक्ति संघर्ष की एक नई चेतना पैदा हुई। साथ ही, भारत सहित इन सभी देशों का मजदूर वर्ग, जिसने अभी सिर्फ अपनी आर्थिक मांगों के लिए यूनियन बनाकर लड़ने की शुरुआत की थी, वह तेजी से राजनीतिक संघर्ष की राह पर भी आगे बढ़ा और अपनी राजनीतिक पार्टी बनाकर नई सामाजिक क्रान्ति की तैयारियों में लग गया।

1917 से लेकर 1953 में स्तालिन की मृत्यु तक, जबतक सोवियत संघ में समाजवाद कायम था, उसने पूरी दुनिया के हर कोने में जारी जन-मुक्ति संघर्ष को हर तरह का समर्थन-सहयोग दिया और औपनिवेशिक गुलामी के दौर के खात्मे में अहम भूमिका निभाई।

समाजवाद की अस्थायी हार और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना का दौर फिर भी बुझी नहीं है अक्टूबर क्रान्ति की मशाल!

स्तालिन की मृत्यु के बाद सोवियत संघ में ख्रुश्चेव के नेतृत्व में एक नये किस्म के पूंजीपति वर्ग का शासन कायम हो गया। ये पार्टी और राज्य मशीनरी के नौकरशाह थे जो लाल झण्डा, पार्टी और समाजवाद की आड़ लेकर वास्तव में जनता की सम्पत्ति के मालिक बन बैठे थे। यह नये किस्म का राजकीय पूंजीवाद था। 1990 आते-आते यह राजकीय पूंजीवाद खुले निजी पूंजीवाद में बदल गया। सभी नकाब और मुलम्मे उतर गये। असलियत सामने आ गई। सोवियत संघ भी टूट गया।

यह वह दौर था, जब न केवल पूर्वी यूरोप के देशों में खुला पूंजीवाद बहाल हो गया था, बल्कि 1976 में माओ त्से-तुङ की मृत्यु के बाद चीन में भी "बाजार समाजवाद" के नाम पर पूंजीवाद बहाल हो चुका था।

दुनिया भर के साम्राज्यवादियों और पूंजीपतियों के भोंपू लगातार चीखने लगे कि

समाजवाद को हमेशा-हमेशा के लिए नेस्तनाबूद कर दिया गया, कि अक्टूबर क्रान्ति की मशाल हमेशा-हमेशा के लिए बुझा दी गई। क्या यह सच है?

इतिहास कहता है—नहीं! पहले भी ऐसा कई बार हुआ है कि क्रान्तिकारी वर्ग अपनी अन्तिम जीत के पहले सत्ताधारी वर्गों से कई बार परास्त हुए हैं। पहले भी कई बार क्रान्तियों का पहला चक्र अधूरा या असफल रह गया है और फिर उनके नये चक्र ने इतिहास के नये युग की शुरुआत की है। स्वयं पूंजीवाद सामन्तवाद से तीन सौ वर्षों तक लड़ने और कई-कई बार पराजित होने के बाद ही अन्तिम जीत हासिल कर सका।

सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच के विश्व-ऐतिहासिक महासमर का अभी पहला चक्र पूरा हुआ है। नया चक्र अब शुरू हुआ है। पूरी दुनिया में अक्टूबर क्रान्ति के नये संस्करणों का निर्माण अवश्यम्भावी है।

पर इतना ही कहना काफी नहीं। आज विश्व स्तर पर चरम संकटग्रस्त पूंजीवाद मेहनतकशों पर जो कहर बरपा कर रहा है, उससे निजात पाने के लिए अक्टूबर क्रान्ति की मशाल से नई क्रान्तियों का दावानल भड़काना होगा। और इसके लिए जरूरी है कि मेहनतकश अवाम और उसका इंकलाबी हिरावल दस्ता समाजवाद की फिलहाली हार के सभी कारणों को भलीभांति समझे।

समाजवादी समाज में जारी वर्ग-संघर्ष और पूंजीवाद की फिर से बहाली में पार्टी के भीतर के बुर्जुआ वर्ग की भूमिका

समाजवाद दरअसल पूंजीवाद और वर्ग-विहीन समाज (कम्युनिज्म) के बीच का एक लम्बा समय होता है जिसमें खेतों-कारखानों पर निजी मालिकाने के खात्मे के बावजूद अभी विभिन्न छोटे स्तरों पर निजी स्वामित्व मौजूद रहता है, अन्तर एवं असमानताएं मौजूद रहती हैं, बाजार व मुद्रा मौजूद रहते हैं, शारीरिक श्रम व मानसिक श्रम जैसे भेद मौजूद रहते हैं, तनख्वाहों में अन्तर बना रहता है, पुरानी आदतें व संस्कार मौजूद रहते हैं, वर्ग-संघर्ष जारी रहता है तथा इस तरह पूंजीवाद के एक या दूसरे रूप में बहाली का खतरा भीतर से भी बना रहता है। (बाहरी साम्राज्यवादी हमले या तोड़फोड़ का खतरा तो लगातार रहता ही है)।

समाजवादी समाज में मौजूद बुर्जुआ वर्गों के हितों की नुमाइन्दगी कम्युनिस्ट पार्टी व राज्य के नेतृत्व में मौजूद वे लोग करते हैं जो अपने ओहदे के विशेषाधिकारों-सुविधाओं के गुलाम बन चुके होते हैं, जो खुद नौकरशाह बन चुके होते हैं, जो वर्ग संघर्ष को तिलांजलि देकर शांतिपूर्ण विकास की वकालत करते हैं। ये खुद ही एक किस्म के बुर्जुआ वर्ग होते हैं—पार्टी के भीतर के बुर्जुआ वर्ग, जो लाल झण्डा, पार्टी और समाजवाद की आड़ में जनता को ठगकर साम्राज्यवाद और पूंजीवाद की "ऐतिहासिक" सेवा करते हैं। रूस में ख्रुश्चेव-ब्रेझनेव ने और चीन में देङ सियाओ-पिङ और उसके उत्तराधिकारियों

ने यही काम किया।

संशोधनवादी और हर तरह के नकली कम्युनिस्ट वे भितरघाती हैं जो मजदूरों की लड़ाई को अन्दर से कमजोर करके पूंजीपतियों की सेवा करते हैं!

यही वे नकली कम्युनिस्ट हैं, जिन्होंने न केवल समाजवाद को तबाह करके विश्व पूंजीवाद की सेवा की है, बल्कि क्रान्ति होने के पहले भी, यही भितरघाती, मजदूरों की हर लड़ाई को भीतर से कमजोर करते रहे हैं, उनकी पीठ में चाकू भोंकने का काम करते रहे हैं। इन संशोधनवादियों के बारे में लेनिन ने और फिर स्तालिन और माओ ने दुनिया भर के क्रान्तिकारी सर्वहारा वर्ग और सच्चे कम्युनिस्टों को बार-बार आगाह किया था। रूस के मेन्शेविकों, जर्मनी के कार्ल काउत्स्की और ख्रुश्चेव-ब्रेझनेव, देङ सियाओ-पिङ तथा हमारे देश के डांगे-इन्द्रजीत गुप्त-ज्योति बसु-सुरजीत आदि की नस्ल और बिरादरी एक है।

लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविकों ने यदि मेन्शेविकों के अर्थवाद और सुधारवाद के विरुद्ध संघर्ष नहीं किया होता तो क्रान्तिकारी सर्वहारा पार्टी का रूस में गठन ही नहीं हुआ होता। कार्ल काउत्स्की और दूसरे इण्टरनेशनल के संशोधनवादियों के विरुद्ध संघर्ष करके लेनिन ने यदि उनका असली चरित्र उजागर नहीं किया होता तो महान अक्टूबर क्रान्ति के लिए रूसी पार्टी और मेहनतकश अवाम की तैयारी ही नहीं हो पाती। यदि माओ ने ख्रुश्चेव के नकली कम्युनिज्म का भण्डाफोड़ नहीं किया होता और चीन के भीतर ल्यू शाओ-ची के गिरोह के विरोध में संघर्ष नहीं किया होता तो महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति का युगान्तरकारी प्रयोग सम्भव ही नहीं हो पाता।

आज भी यह बात पूरी दुनिया और हमारे देश के सन्दर्भ में सही है। समाजवाद को बदनाम करने के लिए पूंजीवादी प्रचार तंत्र ख्रुश्चेव-ब्रेझनेव और देङ आदि संशोधनवादियों के सभी कुकर्मों की तोहमत समाजवाद के मत्थे मढ़ रहा है। हमारे देश में भी इन्द्रजीत गुप्त से लेकर ज्योति बसु तक—इन सबके पाप का घड़ा कम्युनिज्म के मत्थे फोड़कर कम्युनिज्म के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों को बदनाम किया जाता है। यूरोप से लेकर भारत तक—ये सभी किसिम-किसिम के नकली कम्युनिस्ट बुर्जुआ संसदों के सुअरबाड़ों में बरसों से लोट लगा रहे हैं और अब तो प्रायः सरकारों में शामिल होकर उदारीकरण और निजीकरण की नीतियों को लागू करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। पहले तो यह पूंजीवादी व्यवस्था की दूसरी सुरक्षापंक्ति के रूप में छिपकर काम करते थे और कम्बल ओढ़कर घी पीते थे। अब यह सब कुछ खुलेआम हो रहा है। इसका लाभ यह है कि मेहनतकश जनता, जो मार्क्सवाद के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों से अपरिचित है, वह भी इनकी करनी से इनकी असली चरित्र पहचानने लगी है। शेर की खाल ओढ़कर 'ढेंचू-ढेंचू' करने वाले पहचाने जाने लगे हैं।

नकली वामपंथियों का भण्डाफोड़ लगातार करो! ट्रेड यूनियनों से अर्थवाद-सुधारवाद और नौकरशाही को उखाड़ फेंको!!

फिर भी सर्वहारा क्रान्तिकारियों को निश्चिन्त होने की जरूरत नहीं है। क्योंकि क्रान्तिकारी कम्युनिस्टों के बिखरे होने और कमजोर होने के कारण, बहुतेरे मेहनतकश ज्योति बसु-इन्द्रजीत गुप्त की पार्टियों और एटक-सीटू आदि के नेताओं को ही कम्युनिस्ट समझते हैं। व्यापक मजदूर आबादी को कम्युनिज्म के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों से और संशोधनवाद-अर्थवाद की असलियत से परिचित कराने के लिए क्रान्तिकारी प्रचार की कार्रवाई जरूरी है।

मजदूर यूनियनों में अभी भी इन्हीं अर्थवादी ट्रेड यूनियन नेताओं की नौकरशाही हावी है, जिन्होंने मजदूर वर्ग को सिर्फ आर्थिक मांगों की लड़ाई तक ही सीमित रखकर उसे उसके राजनीतिक संघर्ष के कार्यभार और पूंजी के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष के ऐतिहासिक मिशन से एकदम अपरिचित रखा है। इनके असली चरित्र को जानने के बाद मजदूर वर्ग निराश होकर या तो बुर्जुआ ट्रेडयूनियनों की ओर जा रहा है या फिर अराजकतावादी ढंग के आन्दोलन-उभार का रास्ता अपना रहा है। इसके बजाय मजदूर वर्ग क्रान्तिकारी आधार पर ट्रेड यूनियन आन्दोलन के पुनर्निर्माण का रास्ता अपनाये, व्यापक मजदूर एकता के नारे को अमली जामा पहनाये और जनवादी तौर-तरीकों के द्वारा ट्रेड यूनियन नौकरशाही की जड़ ही खोद डाले—इसके लिए मजदूर आबादी के बीच व्यापक क्रान्तिकारी प्रचार और शिक्षा की कार्रवाई चलानी होगी। और यह काम उनके बीच जाकर उनके रोजमर्रे के आर्थिक और राजनीतिक मांगों के संघर्षों में सक्रिय भागीदारी के साथ-साथ करना होगा।

ट्रेड यूनियन आन्दोलन का क्रान्तिकारीकरण भी वही मजदूर वर्ग कर सकता है जो राजनीतिक संघर्ष के अपने कार्यभार को भी समझे और अपने वर्ग संगठन के सबसे उन्नत रूप के तौर पर एक क्रान्तिकारी सर्वहारा पार्टी के निर्माण की जरूरत को महसूस करे। कहा जा सकता है कि ट्रेड यूनियन आन्दोलन के क्रान्तिकारीकरण के कार्यभार और एक सर्वभारतीय क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के निर्माण एवं गठन से सम्बन्धित कार्यभार एकदम अलग-अलग न होकर एक-दूसरे से अनेक रूपों में जुड़े हुए हैं।

दुर्भाग्य से वामपन्थी दुस्साहसवादी भटकावों और भारतीय परिस्थितियों की गलत समझ के कारण भारत के क्रान्तिकारी कम्युनिस्टों ने औद्योगिक सर्वहारा वर्ग के बीच और ट्रेड यूनियन के मोर्चे पर कामों की या तो उपेक्षा की या फिर सही ढंग से काम ही नहीं किया। "वामपन्थी" भटकावों से उबरे क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट संगठनों ने यदि इस मोर्चे पर काम भी शुरू किया तो वस्तुतः अर्थवादी-जुझारू अर्थवादी तौर-तरीके ही अपनाते रहे। स्थिति कुछ ऐसी रही कि पार्टी बनाने से सम्बन्धित राजनीतिक कामों के लिए वामपन्थी बुद्धिजीवियों पर भरोसा किया जाता रहा और मजदूरों को महज आर्थिक

संघर्षों के लिए ही छोड़ दिया जाता रहा।

आज हालात ऐसे हैं कि मजदूर यदि नीतियां बनाने वाली पूंजीवादी राज्य मशीनरी के खिलाफ राजनीतिक लड़ाई नहीं लड़ेगा, तो अलग-अलग बंटकर लड़ता हुआ अपनी छोटी-छोटी आर्थिक मांगें भी नहीं मनवा पायेगा!

यह एक अच्छी बात है कि आज भारतीय शासक वर्ग की आर्थिक नीतियों ने खुद ही ऐसी अनुकूल स्थिति पैदा कर दी है कि मजदूर वर्ग राजनीतिक अधिकारों के संघर्ष के लिए प्रचार को स्वीकार करने के लिए पहले हमेशा से अधिक तैयार होता जा रहा है। निजीकरण और उदारीकरण की नीतियां संकटग्रस्त विश्व पूंजीवाद की नीतियां हैं जो भारत में भी मेहनतकश जनता के सामने छंटनी-तालाबन्दी, बेरोजगारी और महंगाई का अभूतपूर्व कहर बरपाना शुरू कर चुकी हैं। मेहनतकश अवाम समझता जा रहा है कि अब सिर्फ वेतन-वृद्धि और चन्द सुविधाओं के लिए लड़ने पर वह भी नहीं मिलने वाला। अब वेतन-वृद्धि की आंशिक लड़ाई भी तभी जीती जा सकती है जब पूरी आर्थिक नीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई जाये, रोजगार के बुनियादी अधिकार को मुद्दा बनाया जाये और जनविरोधी नीतियों को बनाने और लागू करने वाली राज्य मशीनरी के खिलाफ संगठित हुआ जाये। हालात ऐसे बन रहे हैं कि मजदूर वर्ग ट्रेड यूनियन के धन्धेबाजों की गिरफ्त से बाहर आकर इस सच्चाई को आसानी से समझ और पकड़ सकता है।

आगे बढ़ने की पहली शर्त–जयचन्दों और मीर जाफरों से छुटकारा पाना होगा!

इतिहास में यह सच्चाई एक बार फिर और उन्नत धरातल पर दुहराई जायेगी कि सर्वहारा वर्ग युद्ध में विजय की पहली गारण्टी के तौर पर अपने भितरघातियों से–जयचन्दों और मीरजाफरों से–भांति-भांति के अर्थवादी, उदारवादी, सुधारवादी नकली कम्युनिस्टों और मजदूर नेताओं से अपना पीछा छुड़ायेगा। अक्टूबर क्रान्ति के पूर्व भी ऐसा ही हुआ था। अब अक्टूबर क्रान्ति के नये संस्करण के जन्म के पूर्व भी ऐसा ही होगा।

अक्टूबर क्रान्ति की मशाल बुझा देने के तमाम साम्राज्यवादी दावे अभी झूठे साबित हो रहे हैं। रूस, उक्रेन व पूर्व सोवियत संघ के अन्य घटक देशों में जनता लाखों की तादाद में लेनिन और स्तालिन के पोस्टर हाथों में लिये येल्तिसन के साथ ही जुगानोव जैसे फर्जी कम्युनिस्टों के खिलाफ भी नारे लगा रही है और दर्जनों क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट संगठन फिलहाल वहां सक्रिय हैं। लातिन अमेरिका और एशिया के तमाम देशों में आर्थिक नवउपनिवेशवाद की तबाही के खिलाफ लगातार जन विद्रोहों की खबरें आ रही हैं। इन देशों में भी क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट जनता के बीच लगातार काम कर रहे हैं। यूरोप से लेकर जापान, कोरिया आदि देशों तक नये सिरे से उठ खड़े हुए जुझारू मजदूर आन्दोलन ''दैत्य के दुर्ग के भीतर तूफान'' का संकेत दे रहे हैं।

हमारा दृढ़ विश्वास है कि सर्वहारा वर्ग विश्व पूंजीवाद के दुर्गों पर फैसलाकुन चोट करने के लिए जाग रहा है।

हम आह्वान करते हैं...

अक्टूबर क्रान्ति की 80वीं सालगिरह के मौके पर हम भारतीय मजदूर वर्ग का भी आह्वान करते हैं कि जागो! एकताबद्ध हो जाओ!! आगे बढ़ो!!!

हम आह्वान करते हैं कि नकली वाम को पहचानो, असली वाम का झण्डा ऊपर उठाओ!

हम आह्वान करते हैं कि ट्रेड यूनियन आन्दोलन से नौकरशाही और अर्थवाद-सुधारवाद को उखाड़ फेंको! अलग-अलग ट्रेड यूनियनों की दलगत दुकानदारियों में मजदूरों को बांटे जाने की साजिश को पहचानो और व्यापक मजदूर एकता और जनवाद के आधार पर संगठित हो जाओ!

हम आह्वान करते हैं कि सिर्फ आर्थिक लड़ाई लड़ने के बजाय अपने राजनीतिक अधिकारों के लिए लड़ो, मजदूर विरोधी आर्थिक नीतियां बनाने वाली राज्यसत्ता के खिलाफ राजनीतिक लड़ाई लड़ो!

हम आह्वान करते हैं कि क्रान्तिकारी विचारधारा के मार्गदर्शक सिद्धान्त और क्रान्तिकारी पार्टी के राजनीतिक जरूरत को पहचानो! देश स्तर पर सर्वहारा वर्ग की एक क्रान्तिकारी पार्टी फिर से खड़ी करने के लिए आगे आओ।

हम आह्वान करते हैं—महान अक्टूबर क्रान्ति की मशाल को ऊंचा उठाओ। ▣

('बिगुल', नवम्बर 1997 में प्रकाशित)

अक्टूबर की हवाएं मरी नहीं हैं! वे फिर उठेंगी भयंकर तूफान बनकर!

आज से 82 वर्षों पहले, **लेनिन** और **बोल्शेविक पार्टी** के नेतृत्व में रूस में पेत्रोग्राद के मजदूरों ने शीत प्रासाद पर धावा बोलकर अस्थायी सरकार की सत्ता को धूल में मिला दिया था और पहली सफल सर्वहारा क्रान्ति को अंजाम दिया था। **अक्टूबर क्रान्ति** पहले विश्वयुद्ध के बीच सम्पन्न हुई थी जब प्रतिस्पर्धी साम्राज्यवादी डकैत गिरोहों के आपसी युद्ध में लाखों लोग अपने प्राण गंवा रहे थे।

यूरोप के अधिकांश देशों के मजदूरों के तथाकथित समाजवादी नेता अन्धराष्ट्रवादी बयार में बहकर इस जघन्यतम अपराध के साझीदार बन चुके थे और यूरोपीय मजदूर वर्ग का आह्वान कर रहे थे कि वे "मातृभूमि की रक्षा" के नाम पर अपने ही शोषकों के हितों के लिए अपनी बलि दें। बोल्शेविक दूसरे इण्टरनेशनल के इन गद्दारों के विरुद्ध, एकदम अलग-थलग पड़ जाने का खतरा मोल लेकर भी, डटकर खड़े हुए। अपने देश में भी भांति-भांति की सुधारवादी, अर्थवादी धाराओं से समझौताहीन संघर्ष करके उन्होंने मजबूत विचारधारात्मक आधार पर सुसंगठित क्रान्तिकारी ढांचे वाली पार्टी खड़ी की और सर्वहारा वर्ग तथा व्यापक मेहनतकश जन समुदाय को नेतृत्व देते हुए तत्कालीन रूस की विशिष्ट क्रान्तिकारी परिस्थितियों से गुजरते हुए पुरानी व्यवस्था को चकनाचूर कर देने के लिए तैयार किया।

यूं कहने के लिए 1917 की सोवियत समाजवादी क्रान्ति को अक्टूबर क्रान्ति कहा जाता है, लेकिन सच यह है कि शीतप्रासाद पर धावा और अस्थायी सरकार को सत्ताच्युत करने की ऐतिहासिक शौर्यपूर्ण कार्रवाई का दिन (पुराने कैलेण्डर से 25 अक्टूबर, नये कैलेण्डर से 7 नवम्बर) क्रान्ति के सर्वोपरि राजनीतिक कार्यभार—राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करने के कार्यभार के समापन का नहीं बल्कि समारम्भ का दिन था। सभी प्रतिक्रियावादी ताकतों ने एकजुट होकर नवजात क्रान्तिकारी सर्वहारा सत्ता पर हमला बोल दिया। दुनिया भर के सभी साम्राज्यवादी न सिर्फ उनकी पीठ पर खड़े रहे, बल्कि सीधे हमले की कार्रवाई से भी बाज नहीं आये। गृहयुद्ध के कठिन वर्षों से गुजरने के बाद ही सर्वहारा वर्ग राजनीतिक सत्ता देशव्यापी स्तर पर, प्रभावी ढंग से हासिल कर

सका। कहा जा सकता है कि अक्टूबर क्रान्ति पूरे विश्व पूंजीवादी तंत्र के खिलाफ अन्तरराष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग द्वारा युद्ध की घोषणां थी। इसलिए लाजिमी तौर पर इसे न सिर्फ रूस बल्कि पूरी दुनिया के साम्राज्यवादियों के प्रचण्डतम क्रोध का शिकार होना ही था।

बोल्शेविकों को यह पूरी उम्मीद थी कि यूरोप के मजदूर रूसी सर्वहारा के रास्ते पर चल पड़ेंगे क्योंकि महायुद्ध के विनाशकारी नतीजों को वे भी भीषण रूप से भुगत रहे थे। बेशक, अक्टूबर क्रान्ति के बाद पूरे यूरोप में क्रान्तिकारी संघर्षों की एक बड़ी लहर आई, जिसका शिखर-बिन्दु विफल जर्मन क्रान्ति थी, लेकिन मुख्यतः अवसरवादी-संशोधनवादी जकड़बन्दी के चलते और दूसरे, चौकन्ना हो चुके साम्राज्यवादियों की एकजुट कोशिशों के चलते यूरोपीय क्रान्तियों की कोशिशें पीछे धकेल दी गईं। यह यूरोप में क्रान्तिकारी सम्भावनाओं का अन्तिम विस्फोट था जो दरअसल पिछली सदी की मुख्य प्रवृत्ति की यात्रा का ही आखिरी सिरा था। उन्नीसवीं सदी का यूरोप स्वतंत्र प्रतियोगिता वाले पूंजीवाद का रंगमंच था और सर्वहारा क्रान्तियों के तूफान का केन्द्र था। सदी के अन्त में जब इजारेदारियों और विश्वबाजार का विकास हुआ और पूंजीवाद ने साम्राज्यवाद के युग में प्रवेश किया तो उपनिवेशों-अर्द्धउपनिवेशों की भारी लूट से यूरोपीय लुटेरों ने अपने देशों के संगठित सर्वहाराओं के एक बड़े हिस्से को रियायतों और सुविधाओं की घूस दी और इन सुविधाप्राप्त सफेदपोश मजदूरों में अवसरवाद-अर्थवाद की राजनीति का आधार विस्तारित हुआ। क्रान्तियों के तूफानों का केन्द्र पश्चिम से खिसककर पूरब में आने लगा और उपनिवेशों की साम्राज्यवाद-सामन्तवाद विरोधी राष्ट्रीय जनवादी क्रान्तियां विश्व सर्वहारा क्रान्ति का अंग बन गईं।

1917 का रूस न विकसित पश्चिम का अंग था, न ही पिछड़े पूरब का। वह पूरब-पश्चिम के बीच का सेतु था और क्रान्तियों के तूफानों का केन्द्र जब पश्चिम से पूरब की ओर आ रहा था तो रूसी सर्वहारा वर्ग ने ऐतिहासिक भूमिका निभाते हुए पहली महान, सफल सर्वहारा क्रान्ति को "पूरब-पश्चिम सेतु" पर ही अंजाम दे दिया। पर यूरोप की आग भी संशोधनवादी शीतलहरी के बावजूद अभी पूरी तरह बुझी नहीं थी। अक्टूबर क्रान्ति के बाद वह आखिरी बार अपनी पूरी ताकत लगाकर भड़क उठी थी और फिर कुचल दी गई थी।

●

सोवियत समाजवादी क्रान्ति सर्वहारा क्रान्तियों के युग के पदार्पण की घोषणा थी। यह सभी देशों के मजदूरों के लिए और मुट्ठी भर साम्राज्यवादियों की लूट और दमन की शिकार एशिया, अफ्रीका और लातिन अमेरिका की उत्पीड़ित जनता के लिए युद्धनाद था। युवा समाजवादी राज्य के समर्थन में पूरी दुनिया के मजदूर आगे आये। अक्टूबर क्रान्ति के तोपों के धमाकों ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को धरती के कोने-कोने तक पहुंचा

दिया। दर्जनों देशों में सर्वहारा क्रान्तिकारी पार्टियां संगठित हो गईं। अक्टूबर क्रान्ति के बाद गठित **कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल** ने नई पार्टियों का मार्ग-दर्शन करने और सर्वहारा अन्तरराष्ट्रीयतावाद का झण्डा ऊंचा उठाने में अहम भूमिका निभाई।

अक्टूबर क्रान्ति ने डंके की चोट पर घोषणा करके सर्वहारा अधिनायकत्व की घोषणा की। अबतक की सभी राज्यसत्ताएं किसी न किसी शोषक-शासक वर्ग का अधिनायकत्व ही थीं, पर वे अपने वर्ग-चरित्र पर तरह-तरह के पर्दे डाले रहतीं थीं। सर्वहारा समाजवादी सत्ता ने यह स्वीकार किया कि वह पूंजीपतियों-भूस्वामियों पर सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में बहुसंख्यक मेहनतकश अवाम का अधिनायकत्व स्थापित करेगी। जो राज्यसत्ता जनता के बहुसंख्यक हिस्से के हितों का वास्तव में प्रतिनिधित्व करती है, उसे अपनी मंशा और अपना रंग छुपाने की कोई जरूरत नहीं होती।

प्रारम्भ से ही साम्राज्यवादियों ने और सभी प्रतिक्रियावादियों ने समाजवादी राज्य के प्रति अपनी चरम घृणा और अदम्य भय का लगातार प्रदर्शन किया। बल्कि वे उसे छुपाने में असफल रहे। लेनिन और स्तालिन के नेतृत्व वाले सोवियत संघ को अलग-थलग कर देने, उसका गला घोंट देने, साजिशें करने, तोड़फोड़ करने तथा विभीषणों और शिखण्डियों की मदद से वार करने का कोई भी मौका साम्राज्यवादी कभी नहीं चूके। लेकिन सोवियत सर्वहारा अपने वर्ग-अधिनायकत्व की हिफाजत में सफल रहा। वर्ग-समाजों के हजारों वर्षों के इतिहास में पहली बार उत्पादन के साधनों—कारखानों, खेतों आदि को पूरे समाज की मिल्कियत बना दिया गया। नये समाजवादी उद्योग और कृषि ने विकास के नये कीर्तिमान स्थापित करते हुए अतीत की औद्योगिक क्रान्तियों को पीछे छोड़ दिया। विज्ञान और तकनोलॉजी के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व तरक्की हुई। बेरोजगारी, निरक्षरता, वेश्यावृत्ति, नारी-उत्पीड़न, कुपोषण-जनित बीमारियों और सामाजिक अपराधों का नामोनिशान मिट गया, सामाजिक विषमता की गहरी खाइयां पाट दी गईं, परजीविता की अमरबेल सूख गई और पूरा सोवियत समाज ज्यादा से ज्यादा उन्नत समता- मूलकता की दिशा में लगातार लम्बे डग भरता रहा। यह जागृत मेहनतकश जनता की एकजुट शक्ति और फौलादी संकल्पों का ही नतीजा था कि दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान जर्मन नात्सी साम्राज्यवादियों की पूरी सामरिक शक्ति के सामने सोवियत संघ टिका रहा और फिर उसे धूल में मिलाने के काम को भी उसी ने अंजाम दिया।

●

पेत्रोग्राद के मजदूर जब शीतप्रासाद की ओर बढ़ रहे थे तब शायद उन्हें यह अहसास नहीं रहा होगा कि वे मानवता के इतिहास के एक नये अध्याय का पन्ना पलटने जा रहे हैं। उनकी बन्दूकों ने रूसी क्रान्ति के साथ ही दूसरे देशों में भी क्रान्तियों की राह को रौशन किया। रूसी क्रान्ति की गौरवशाली विरासत को आगे विस्तार देते हुए चीन में माओ ने इस सदी की दूसरी महानतम क्रान्ति को अंजाम दिया। चीन की

नवजनवादी क्रान्ति ने साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और नौकरशाह-दलाल पूंजीवाद के विरुद्ध दीर्घकालिक लोकयुद्ध के रास्ते से विजय प्राप्त की।

अक्टूबर क्रान्ति का ऐतिहासिक महत्व और उसका ऐतिहासिक संवेग आज की दुनिया में भी बरकरार है। सर्वहारा क्रान्तियों की विश्वव्यापी पराजय का यह अर्थ कत्तई नहीं हो सकता कि सर्वहारा क्रान्तियों का युग बीत गया। अपने स्वरूप व कार्यप्रणाली में तमाम बदलावों के बावजूद दुनिया जबतक साम्राज्यवाद के युग में जी रही है, तबतक सर्वहारा क्रान्ति के युग में ही जी रही है।

आने वाली सदी की नई सर्वहारा क्रान्तियों के नये चक्र के लिए अक्टूबर क्रान्ति की शिक्षाओं का महत्व बना रहेगा। अक्टूबर का रास्ता हथियारों के बल पर सर्वहारा वर्ग द्वारा राजनीतिक सत्ता हासिल करने का रास्ता था। उसके बाद की सर्वहारा क्रान्तियों का भी यही रास्ता था और आने वाले दिनों की सर्वहारा क्रान्तियों का रास्ता भी यही होगा।

आज सोवियत संघ का अस्तित्व नहीं रह गया है। 1953 में स्तालिन की मृत्यु के बाद वहां ख्रुश्चेवी नकली समाजवाद के झण्डे तले पूंजीवाद की फिर से बहाली हो गई। गोर्बाचोव-येल्तसिन काल में उस नकली लाल झण्डे को भी फेंक दिया गया और पूंजीवादी तानाशाही नग्न रूप में कायम हो गई। माओ त्से-तुङ ने चीन में सांस्कृतिक क्रान्ति के प्रयोग द्वारा पूंजीवादी पुनर्स्थापना के खतरों से लड़ते हुए और उनका क्रमशः खात्मा करते हुए समाजवाद को आगे ले जाने के रास्ते की खोज तो की, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद वहां भी चीनी नकली कम्युनिस्टों के नेतृत्व में नई पूंजीवादी सत्ता बहाल हो गई।

आज पीछे मुड़कर जब इतिहास के गुजरे दशकों पर हम नजर डालते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि बीसवीं सदी के पूंजीवाद के तमाम अन्दरूनी संकट और ठहराव के बावजूद विश्व स्तर पर वर्ग शक्ति-सन्तुलन अभी सर्वहारा क्रान्तियों के निरन्तर आगे बढ़ते जाने के अनुकूल नहीं था। वैसे इतिहास इस तरह आगे बढ़ता भी नहीं। वह आगे-पीछे होता हुआ आगे बढ़ता है। वैसे यह मूल्यांकन उस समय किया भी नहीं जा सकता था जब जनक्रान्तियों के ज्वार के दबाव में साम्राज्यवाद लगातार पीछे हट रहा था। यह मूल्यांकन, आज की प्रतिकूल स्थितियों में सिंहावलोकन करते हुए ही किया जा सकता है। और यह भी आज का ही वस्तुपरक मूल्यांकन है कि विश्व पूंजीवाद का स्वरूप आज जितना अनुत्पादक और परजीवी है तथा आज इसके संकटों-समस्याओं की असाध्यता की जो प्रकृति है, वैसी पहले कभी नहीं थी। वह अपने संकटों से बेहाल, पूरी दुनिया में और खासकर तीसरी दुनिया में मेहनतकश आबादी पर जो कहर बरपा कर रहा है, उसका सिलसिला अन्तहीन हो ही नहीं सकता। यही अक्टूबर क्रान्ति के नये संस्करण की वस्तुगत जमीन है।

सर्वहारा क्रान्ति की जो बिखरी हुई चेतनशील नेतृत्वकारी शक्तियां हैं, वे अक्टूबर क्रान्ति और चीनी सांस्कृतिक क्रान्ति की शिक्षाओं को आत्मसात् करके मार्क्सवाद के

आलोक में आज की स्थितियों का अध्ययन करके, प्रयोगों के एक सिलसिले के बाद जब नई क्रान्तियों के स्वरूप और रास्ते की समझदारी विकसित कर लेंगी, तो उनकी एकजुटता की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ेगी। साम्राज्यवाद के नये दौर का नक्शा साफ हो रहा है। संक्रमणकाल बीत रहा है। दुनिया के अलग-अलग कोनों से उभड़ते-फूटते वर्ग संघर्ष के मुखर रूप आने वाले तूफान का संकेत दे रहे हैं। अक्टूबर क्रान्ति की हवाएं पूरी तरह से मरी तो कभी नहीं थीं। और सर्वहारा क्रान्ति के विज्ञान की समझ से इतिहास को खंगालने और वर्तमान की कोख में छिपे भविष्य के बीजों को निरखने-परखने के बाद, पूरे भरोसे के साथ कहा जा सकता है कि आने वाले दिनों में वे फिर प्रचण्ड चक्रवाती तूफान बनकर उठेंगी। इक्कीसवीं सदी भूकम्पकारी उथल-पुथल की सदी होगी, यह हमारा गहरा विश्वास है। ▣

('बिगुल', नवम्बर 1999 में प्रकाशित)

अक्टूबर क्रान्ति की शिक्षाएं और हमारा समय, हमारा देश

यह सदी जैसे-जैसे ढल रही है, लाइलाज बीमारियों से जकड़े विश्व-पूंजीवाद की कराहें बढ़ती जा रही हैं। 1989-90 में समाजवाद की "मौत" पर (हालांकि वह समाजवाद की नहीं, समाजवादी मुखौटे वाली एक दोगले पूंजीवाद की यानी सामाजिक जनवाद की या संशोधनवाद की मौत थी) खुशियों की जो किलकारियां फूटी थीं, वे बहुत जल्दी ही गले की घुरघुराहट बनकर रह गई हैं और कम्युनिज्म का हौआ एक बार फिर पूंजीवाद को सताने लगा है। इस तगड़े प्रेत की झाड़-फूंक करते पूंजीवादी अर्थशास्त्री-विचारक ओझा-गुनियों के तमाम तंत्र-मंत्र बेकार सिद्ध हो रहे हैं।

ऐसे में यह बेहद स्वाभाविक है कि सोवियत समाजवादी क्रान्ति की 81वीं सालगिरह के मौके पर मेहनतकश अवाम को उस पहली सफल सर्वहारा क्रान्ति की न सिर्फ याद दिलायी जाये, न सिर्फ उसके इतिहास के और उसके मार्गदर्शक सिद्धान्त के अध्ययन के लिए प्रेरित किया जाये बल्कि इस मसले पर भी सोचने के लिए उसे तैयार करना बेहद जरूरी है कि साम्राज्यवाद के मौजूदा नये दौर की मजदूर क्रान्तियों का स्वरूप कैसा होगा, रास्ता क्या होगा! उसे यह विश्वास दिलाना होगा कि अक्टूबर क्रान्ति के नये संस्करण जरूर तैयार होंगे। पूंजीवाद मानव इतिहास का आखिरी मुकाम नहीं है।

आज जब हम मजदूर क्रान्ति की बात करते हैं तो यह न तो कोरी अटकलबाजी है और न ही कोई किताबी बात। **मार्क्स-एंगेल्स** ने सर्वहारा क्रान्ति के जिस विज्ञान का विकास किया–वह हजारों वर्षों के वर्ग-संघर्षों और अपने समय के पूंजीवाद का अध्ययन करके किया। उनके जीवन-काल में ही 1871 के **पेरिस कम्यून** ने न सिर्फ उनकी सोच को सही साबित किया बल्कि आगे भी बढ़ाया। **लेनिन** ने बीसवीं सदी के नये पूंजीवाद को–दुनिया भर के बाजारों पर इजारेदारी कायम करने वाले पूंजीवाद को, समझा और बताया कि साम्राज्यवाद का यह दौर पूंजीवाद की चरम अवस्था है और सर्वहारा क्रान्तियों की पूर्वबेला है।

1917 की रूसी समाजवादी क्रान्ति ने लेनिन के सिद्धान्तों को सही साबित किया। कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में दुनिया में पहली बार अपनी जंजीरों को तोड़कर मेहनतकशों

ने "स्वर्ग पर धावा" बोला, राज्यसत्ता पर कब्जा हासिल किया, सभी लुटेरे वर्गों पर सर्वहारा वर्ग की अगुवाई में कमेरे वर्गों की हुकूमत बहाल की और साम्राज्यवादी देशों के हमलों, तोड़-फोड़ की कार्रवाइयों तथा देशी प्रतिक्रियावादियों एवं भितरघातियों की साजिशों से निपटते हुए समाजवाद का निर्माण शुरू किया। दुनिया में पहली बार मजदूर राज्य के मालिकाने के रूप में कारखानों पर मेहनतकश जनता का सामूहिक मालिकाना कायम हुआ और खेतों पर भी सामूहिक स्वामित्व कायम करके तथा निजी मालिकाने को खत्म करके शोषण और सामाजिक अन्तर के सबसे बुनियादी आधार को समाप्त कर दिया गया। उत्पादन के साधनों पर उत्पादक वर्गों का सामूहिक स्वामित्व कायम होने के बाद रूस में **स्तालिन** के नेतृत्व में जो तरक्की हुई, वह जगजाहिर रही है। न सिर्फ सभी की बुनियादी जरूरतें पूरी होने लगीं, बल्कि समान रूप से पूरी होने लगीं। शिक्षा-स्वास्थ्य की सुविधाएं मुफ्त थीं। आवास सभी के पास थे। बेरोजगारी थी ही नहीं। तमाम रोगों, अपराधों, वेश्यावृत्ति आदि का खात्मा हो गया। एक समय का पिछड़ा, बर्बर रूस वैज्ञानिक तरक्की में अमेरिका और यूरोप के देशों के करीब आकर खड़ा हो गया।

यही वह मजदूर राज्य था जिसने साम्राज्यवाद के फासिस्ट भस्मासुर हिटलर को शिकस्त देकर पूरी मानवता को उससे निजात दिलाई।

बेशक स्तालिन की मौत के बाद दुनिया भर के पूंजीपतियों और देश के भीतर पूंजीवादी तत्वों की साजिश सफल हुई और ख्रुश्चेव की रहनुमाई में मजदूरों को धोखा देने के लिए लाल झण्डा उड़ाते हुए समाजवादी खोल में पूंजीवादी बहाल कर दिया। पर उधर चीन में अक्टूबर क्रान्ति का झण्डा उठाकर **माओ** ने गद्दार ख्रुश्चेव के खिलाफ वैसी ही उसूली लड़ाई चलाई जैसी लेनिन ने गद्दार काउत्स्की के खिलाफ चलाई थी। उन्होंने **सांस्कृतिक क्रान्ति** के जरिये समाजवाद को आगे बढ़ाने और पूंजीवाद के खतरे को रोकने का सिद्धान्त विकसित किया।

आज **सोवियत संघ बिखर चुका है। 1990 में समाजवादी खोल को फाड़कर** पूंजीवाद का बौना राक्षस बाहर आ गया और रूस में उसका नंगा नाच आज भी जारी है। चीन में भी माओ की मृत्यु के बाद बहाव उलट गया, लेकिन वहां अभी पूंजीवादी राक्षस समाजवादी खोल के भीतर है। कब वह इससे बाहर आता है, देखने की बात है।

पर समाजवादी धारा की आज जो विश्वव्यापी हार की स्थिति है, उससे यह कतई नहीं साबित होता कि अक्टूबर क्रान्ति की मशाल सदा-सर्वदा के लिए बुझ गई। इतिहास में क्रान्तियों की यह गति रही है कि वे लहरों में आगे बढ़ती हैं—आगे-पीछे, ऊपर-नीचे होती हुई। एक वर्ग जब दूसरे वर्ग के खिलाफ क्रान्ति की लड़ाई शुरू करता है तो जमे-जमाये सत्ताधारियों से वह शुरू में हारता भी है, सत्ता हासिल करके फिर गंवा भी देता है, फिर अन्ततः जीत उसकी होती है क्योंकि वह इतिहास को आगे ले जा रहा होता है। सामन्तों के खिलाफ पूंजीवादी क्रान्तियां भी कई हारों के बाद जाकर मुकम्मिल तौर पर जीत

सकीं। सर्वहारा क्रान्तियों के साथ भी आज ऐसा ही हो रहा है। और फिर सोचने की बात यह है कि समाजवादी क्रान्तियों का मकसद सिर्फ पूंजीवाद ही नहीं, चार हजार वर्षों पुरानी निजी स्वामित्व पर आधारित शोषण-असमानता के पूरे सामाजिक ढांचे को तोड़कर कम्युनिज्म की दिशा में आगे बढ़ना है। फिर यदि सर्वहारा क्रान्ति कुछ देशों में कुछ महान डग भरने के बाद पराजित कर दी गयी तो यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है।

अहम बात यह है कि मानव इतिहास चाहे कुछ दशकों तक ही सही, समाजवाद का साक्षी हो चुका है और उसकी जादुई उपलब्धियों को देख चुका है। महत्वपूर्ण बात यह है कि मजदूर वर्ग सत्ता पर काबिज होकर शासन चला सकता है, उत्पादन के साधनों—कारखानों, खेतों आदि को पूरे समाज की मिल्कियत बना सकता है, और यह व्यवस्था चल सकती है—यह साबित हो चुका है। क्रान्तियों की वक्ती हार उनकी मौत नहीं होती, विचारधारा की हार नहीं होती। इतिहास के प्रयोग अकारथ नहीं जाते। उनके अनुभव आगे की क्रान्तियों की विरासत बनते हैं।

इन्हीं अर्थों में महान अक्टूबर क्रान्ति पूरी दुनिया के मजदूरों की विरासत है। जिसे सम्हालना होगा, जिसे समझना होगा और फिर आगे बढ़ाना होगा। पूंजीवाद को अन्तिम तौर पर कब्र में दफनाने वाली आगे की समाजवादी क्रान्तियों के सामने अक्टूबर क्रान्ति एक शुरुआती प्रयोग ही कहलायेगी। पर शुरुआती प्रयोगों का ऐतिहासिक महत्व अमर होता है। वे बुनियाद होते हैं। उन्हीं के जरिये क्रान्ति के सिद्धान्त पहले साबित और फिर विकसित किये जाते हैं और फिर भावी क्रान्तियों के मार्गदर्शक बनते हैं। इस मायने में अक्टूबर क्रान्ति की शिक्षाओं का आज के मेहनतकशों और उनके हिरावल दस्तों के लिए ऐतिहासिक महत्व है।

अक्टूबर क्रान्ति का सबसे महत्वपूर्ण सबक तो यही है कि पूंजीवाद विरोधी मजदूर क्रान्तियां हर-हमेशा सचेतन क्रान्तियां होंगी। महज बगावत क्रान्ति नहीं हो सकती। एक व्यवस्था को मौत वही दे सकता है जिसे इसका तरीका पता हो और जिसके पास एक नई व्यवस्था का मुकम्मल नक्शा हो। यानी क्रान्ति के विज्ञान की ठोस समझ पर आधारित मजदूर वर्ग की एक सही-सच्ची पार्टी के अभाव में क्रान्ति नामुमकिन है। एक ऐसी क्रान्तिकारी पार्टी जो सर्वहारा वर्ग की पार्टी हो, मध्यमवर्गीय भटकावों से मुक्त हो तथा जो मार्क्सवादी विज्ञान के आधार पर देश-विदेश में क्रान्ति के स्वरूप और रास्ते की समझ रखती हो।

भारत में (और दुनिया के अन्य देशों में भी) नये दौर की नयी सर्वहारा क्रान्तियों के लिए नये सिरे से एक क्रान्तिकारी सर्वहारा पार्टी खड़ी करनी होगी। सी.पी.आई., सी. पी.एम. जैसी पार्टियां परुआ बैल की तरह जुआठा कन्धे से पटक चुकी हैं। ये पूंजीवादी पार्टियों के साथ "चोर-सिपाही" का खेल खेल रही हैं। फर्क सिर्फ यह है कि "चुनाव-चुनाव" के इस खेल में इस टीम की जर्सी लाल है। अब एक ऐसी नयी लाल जर्सी और सतरंगी कलंगी वाली सी.पी.आई. (एम.एल.) की टीम मैदान में उतरी है।

जहां तक उन सच्चे क्रान्तिकारी ग्रुपों का सवाल है, जिन्हें एक अखिल भारतीय पार्टी बनाने का काम करना था, तो उनका ठहराव भी गम्भीर है। पिछले अट्ठाइस वर्षों से एकता-प्रयासों का हर नया सिलसिला तमाम दावों को झुठलाते हुए बिखर गया। क्यों? इस पर सोचा जाना चाहिये। आशावाद अति की सीमा पर पहुंचकर नियतिवाद बन जाता है जो लकीर की फ़कीरी का मार्गदर्शक सिद्धान्त होता है।

सच्चाई यह है कि भारत में 1967 के नक्सलबाड़ी के महान किसान-उभार के बाद नई पार्टी बनाने की जो नई शुरुआत होनी थी, वह नेतृत्व की उसूली कमजोरियों के कारण अति वामपन्थी दुस्साहसवाद के मध्यमवर्गीय रोग का शिकार हो गई। जनता के विभिन्न वर्गों का जनसंगठन खड़ा करने, रोजमर्रा के आर्थिक-राजनीतिक मुद्दों पर उनके संयुक्त मोर्चे को क्रमशः मजबूत बनाने के बजाय आतंकवाद की लाइन अपनाई गई। चीन की पार्टी का अन्धानुकरण स्वयं उसी पार्टी की परम्परा को छोड़कर किया गया। भारत की ठोस परिस्थितियों का ठोस विश्लेषण किये बिना क्रान्ति का कार्यक्रम तय कर लिया गया।

गलत स्थापनाओं-धारणाओं के अमल ने ठहराव और टूट-फूट के अलावा किसी और चीज को जन्म नहीं दिया। एक होने की सदिच्छा में 1970 की पार्टी को जीवित करने का सपना लेकर सर्वहारा क्रान्तिकारी चलते रहे हैं, लेकिन चौथाई शताब्दी से भी अधिक समय तक इस काम में लगातार असफल होते रहने के बुनियादी कारणों पर सोचने की जहमत वे नहीं मोल लेते।

हमारी यह पक्की सोच है कि 1967 से शुरू हुए कम्युनिस्ट आन्दोलन के इतिहास के दौर का भी अब अवसान हो चुका है और अब एकदम नये सिरे से एक क्रान्तिकारी पार्टी के गठन और निर्माण के सवाल पर सोचा जाना चाहिए। सर्वहारा क्रान्तिकारी तत्व आज भी कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी शिविर के ग्रुपों की कतारों में ही सर्वाधिक हैं। पर इन ग्रुपों के संघटक तत्व भले क्रान्तिकारी हों, इनकी संगठनात्मक बनावट-बुनावट मार्क्सवाद के अनुरूप नहीं है, क्रान्तिकारी नहीं है। कतारें क्रान्तिकारी हैं पर संगठन जनवादी केन्द्रीयता के उसूलों के बजाय या तो नौकरशाहाना केन्द्रीयता लागू कर रहे हैं, या फिर ढीला-ढाला संघवाद, या फिर दोनों ही एक साथ। साथ ही, इन ग्रुपों के नेतृत्व का एक बड़ा हिस्सा आज मार्क्स से लेकर माओ तक की दुहाई देता हुआ कठमुल्लावाद से अवसरवाद की दिशा में अग्रसर है।

इन हालात में क्रान्तिकारी तत्वों को नये सिरे से एकजुट करने तथा पूंजीवाद के लगातार गहराते कोप-कहर से बदहाल सर्वहारा और मध्यम वर्ग की निचली कतारों के विद्रोही नौजवानों की नई क्रान्तिकारी भरती के द्वारा एक नई सर्वहारा पार्टी खड़ी करने के लिए एक क्रान्तिकारी मजदूर अखबार को माध्यम और केन्द्र बनाया जाना चाहिये। इस अखबार में हमारे आज के समाज के आर्थिक सम्बन्धों, राजनीतिक तंत्र और सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे पर बहस चलनी चाहिये और क्रान्ति के सही-सटीक स्वरूप

और मार्ग का निर्धारण किया जाना चाहिये।

वैसे तो ऐसी बहस नक्सलबाड़ी के बाद के दौर में ही चलनी चाहिये थी और चली भी, पर उसे वामपन्थी दुस्साहसवाद द्वारा दबा दिया गया क्योंकि उसके लेखे सब कुछ तय था, पूर्वनिश्चित था। आज ऐसी स्वस्थ बहस से वे जिम्मेदार तत्व कतई नहीं कतरा सकते जो आत्मतुष्ट नहीं हैं। यह प्रतीक्षा नहीं की जा सकती कि फिर कोई नक्सलबाड़ी होगा और क्रान्तिकारी उसके आलोक में एक हो जायेंगे। ऐसा होगा भी नहीं। पार्टी वैज्ञानिक विचारधारा के मार्गदर्शन में व्यवहार और सिद्धान्त की प्रक्रिया से गुजरकर एक कार्यक्रम पर बनेगी।

●

हमारी अपनी सोच यह है कि द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर काल की आधी सदी की यात्रा के बाद आज भूमण्डलीकरण के झण्डे के साथ साम्राज्यवाद आर्थिक नवउपनिवेशवाद के दौर में प्रविष्ट हो चुका है जब भारत जैसे देश भी एक नई समाजवादी क्रान्ति की मंजिल में प्रविष्ट हो चुके हैं और अक्टूबर क्रान्ति की शिक्षाएं आज हमारे लिए नये सन्दर्भों में और अधिक प्रासंगिक हो चुकी हैं।

बहरहाल, यहां भारतीय क्रान्ति के स्वरूप सम्बन्धी अपनी सोच की हम तफसील से चर्चा नहीं करेंगे। बस इतना स्पष्ट करना चाहेंगे कि हम इस मसले पर पूरी बहस के लिए तैयार हैं।

साथ ही, एक क्रान्तिकारी मजदूर अखबार को केन्द्र में रखकर क्रान्तिकारी पार्टी बनाने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का दूसरा मतलब यह भी है कि इस अखबार के जरिये औद्योगिक मजदूरों, असंगठित क्षेत्र के मजदूरों, बेकार और अस्थायी मजदूरों तथा गांवों के सभी मजदूरों के बीच सर्वहारा क्रान्ति के विज्ञान का, उसके मकसद का, इसके रास्ते का प्रचार किया जाये और उनके बीच से क्रान्तिकारी कतारों में नई भरती की जाये। ऐसे अखबार को मजदूरों में एक प्रचारक, शिक्षक और आन्दोलनकर्ता के रूप में ही नहीं, एक संगठनकर्ता के रूप में भी जाना होगा। ऐसे अखबार में उनकी जीवन-स्थितियों और संघर्षों की भी रपटें छपनी चाहिये और नतीजे के तौर पर जरूरी काम निकालने वाले विश्लेषण भी किये जाने चाहिये।

हमारी सोच है कि बहस के मुद्दे केवल यही नहीं हैं कि आज का सही मार्क्सवाद क्या है और भारतीय क्रान्ति का स्वरूप क्या है? बहस का एक मुद्दा संगठन का ढांचा और उसका सिद्धान्त—जनवादी केन्द्रीयता का प्रश्न भी है क्योंकि जनवादी केन्द्रीयता पर काम करने वाला संगठन ही जनदिशा को लागू कर सकता है। साथ ही, जनदिशा लागू करने में लगा संगठन ही अपनी कतारों की उन्नत राजनीतिक चेतना के आधार पर जनवादी केन्द्रीयता लागू कर सकता है। इस मामले में भी अक्टूबर क्रान्ति के अनुभव हमारे लिए बहुत कीमती हैं।

अक्टूबर क्रान्ति और उत्तरवर्ती चीनी क्रान्ति का एक अनुभव यह भी है कि सर्वहारा क्रान्ति के लिए अन्य शोषित वर्गों के साथ संयुक्त मोर्चा भी जरूरी है। भारत जैसे पिछड़े देश में मजदूर वर्ग जब तक शहरी गरीबों के साथ ही गांव के गरीबों के साथ भी दृढ़ मोर्चा नहीं बनायेगा, तब तक वह समाजवादी क्रान्ति कर ही नहीं सकता। मध्यवर्ग सिर्फ ढुलमुल दोस्त की भूमिका निभायेगा और निर्णायक संघर्ष में उसका एक हिस्सा जनता के साथ होगा जबकि दूसरा हिस्सा पूंजीवाद के प्रति वफादार होगा। चीन में राष्ट्रीय पूंजीपति और धनी किसान जनवादी क्रान्ति के ढुलमुल दोस्त थे। आज के भारत में समूचे पूंजीपति और मुनाफे के लिए खेती करने वाले धनी मालिक किसान साम्राज्यवादियों के साथ जनता के विरोधी पाले में खड़े हैं।

●

अक्टूबर क्रान्ति ने पेरिस कम्यून के इस सबक को और अधिक ठोस किया था कि सर्वहारा क्रान्ति फैसलाकुन ढंग से हिंसक और सशस्त्र ही हो सकती है। पूंजीपति स्वेच्छा से राज्यसत्ता सौंपकर अपनी कब्र नहीं खोदेंगे। क्रान्तिकारी पार्टी को एक ऐसी क्रान्ति के संचालन और नेतृत्व के लिए पहले दिन से ही तैयार रहना होता है ताकि सही समय पर सही ढंग से वह मजदूरों को इसके लिए तैयार कर सके। इस बात का अध्ययन जरूरी है कि बोल्शेविकों ने यूनियनों के कार्यों में भागीदारी करते हुए और सोवियतों में संगठित मजदूरों-किसानों को अपने नेतृत्व के तहत लाने का काम करते हुए हथियारबन्द बगावत के अनुकूल मौके का लाभ किस प्रकार उठाया और किस प्रकार इसकी तैयारी की जाये। यहां इतना जोड़ देना जरूरी है कि आज के रूस और पूर्वी यूरोप के देशों की नहीं, बल्कि भारत जैसे देशों की बुर्जुआ राज्यसत्ता भी, जारकालीन रूसी राज्यसत्ता से अधिक उन्नत, आधुनिक, व्यापक आधारों वाली और मजबूत है। उन्नत किस्म के पूंजीवादी जनवाद के रूप में पूंजीवादी अधिनायकत्व यहां अधिक मजबूत है। पिछले पचास वर्षों में हुए पूंजीवादी विकास ने, गांवों में घोर प्रतिक्रियावादी वर्ग के रूप में कुलकों और पूंजीवादी भूस्वामियों का संगठित विकास किया है जो सत्ता की हिस्सेदारी में इजारेदार वित्तीय-औद्योगिक पूंजीपति वर्ग का छोटा भागीदार है। पूंजी की सत्ता से जुड़े अन्य परजीवी वर्गों का भी काफी विस्तार हुआ है। बैंकों, अन्य वित्तीय संस्थाओं से लेकर सरकारी दफ्तरों तक के जरिये सुदूरवर्ती गांवों तक पूंजी और पूंजीवादी राज्यसत्ता की पकड़ मजबूत हुई है।

यही नहीं, भारतीय राज्यसत्ता का दमनतंत्र—सेना-पुलिस और खुफिया तंत्र भी जारशाही से अधिक उन्नत है और साम्राज्यवाद किसी भी तरह के क्रान्तिकारी उभार की स्थिति में इसे हर तरह की मदद देने के लिए चाक-चौबन्द खड़ा है।

ऐसी स्थिति में क्रान्तिकारी पार्टी के बारे में लेनिन और अक्टूबर क्रान्ति की शिक्षाएं हमारे समय और हमारे देश पर अक्टूबर क्रान्ति के समय से भी अधिक लागू

होती है।

पूंजीपति वर्ग से बलपूर्वक राज्यसत्ता छीनने का काम केवल सर्वहारा वर्ग की ऐसी ही पार्टी कर सकती है जो चवन्निया मेम्बरी वाली जन-पार्टी न होकर कैडर-पार्टी हो, जिसके सदस्य तपे-तपाये क्रान्तिकारी कार्यकर्ता हों जो सही मायने में मजदूरों के हरावल हों, जिस पार्टी की सदस्यता केवल सदस्यता शुल्क देने और कार्यक्रम मानने वालों को न दी जाती हो, बल्कि सदस्य बनने के लिए किसी भी मोर्चे या जनसंगठन की पार्टी इकाई/सेल/ फ्रैक्शन/न्यूक्लियस या कमेटी में सक्रिय सदस्य होना जरूरी हो। सर्वहारा वर्ग की ऐसी क्रान्तिकारी पार्टी का मेरुदण्ड पेशेवर क्रान्तिकारी (यानी पूरावक्ती क्रान्तिकारी कार्यकर्ता) होते हैं। ऐसी पार्टी पहले ही दिन से पूंजीवादी राज्यसत्ता को उखाड़ फेंकने के लक्ष्य को सामने रखकर अपनी तैयारी करती है और अपने को कभी भी पूंजीवादी राज्यसत्ता की मर्जी पर छोड़कर निश्चिन्त नहीं होती है। वह जानती है कि क्रान्ति को कुचलने के लिए पूंजीपति वर्ग सबसे पहले उसके हिरावल दस्ते को, सर्वहारा वर्ग की पार्टी को नेस्तनाबूद करने की कोशिश करता है। अतः संसदीय चुनाव सहित पूंजीवादी जनवाद के सभी खेलों के भ्रम में न पड़कर सर्वहारा पार्टी अपने ढांचे और कार्यप्रणाली को हर हमेशा गुप्त रखती है। वह संघर्ष के कानूनी रूपों का इस्तेमाल करती है, उपयोगी होने पर कार्यनीति के तौर पर, क्रान्तिकारी प्रचार के लिए पूंजीवादी संसदीय चुनावों और संसद का भी इस्तेमाल करती है—पर वह कभी भी अपने को एक पूरी तरह कानूनी और संसदीय पार्टी में रूपान्तरित नहीं करती जैसा कि आज हमारे देश में सी.पी.आई, सी.पी.एम. और सी.पी.आई (एम.एल., लिबरेशन) ने कर लिया है। लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक इसी मुद्दे पर मेन्शेविकों से अलग हो गये थे। आगे चलकर, कार्ल काउत्स्की के नेतृत्व में यूरोप की मजदूर पार्टियों ने भी जब क्रान्ति का रास्ता छोड़ा तो अपने को पूरी तरह खुली, कानूनी और संसदीय पार्टियों में रूपान्तरित कर लिया। लेनिन ने इसका कारण स्पष्ट करते हुए बताया कि ऐसा सिर्फ वही गद्दार कर सकते हैं, जिन्होंने बुर्जुआ वर्ग का तख्ता पलटने के बजाय उनकी गोद में बैठना स्वीकार कर लिया हो।

लेनिन की पार्टी अक्टूबर क्रान्ति को अंजाम देने में इसलिए सफल हो सकी, क्योंकि उसने मेन्शेविकों और कार्ल काउत्स्की के चेले-चाटियों से अलग अपने को सच्चे क्रान्तिकारी सांचे में ढाला था और सशस्त्र क्रान्ति के लिए व्यापक, लम्बी और पूरी तैयारी की थी।

लेनिन की पार्टी ट्रेड यूनियनों में मजदूरों को संगठित करते हुए महज आर्थिक मांगों पर ही लड़ने के बजाय राजनीतिक अधिकारों को लेकर भी लड़ी और क्रान्तिकारी प्रचार के द्वारा उसने मजदूरों को सर्वहारा वर्ग के ऐतिहासिक मिशन से परिचित कराया। लेनिन की पार्टी ने मौका देखकर चुनाव में भी हिस्सा लिया पर चुनाववादी नहीं बनी, बल्कि जार के नकली जनवाद का पर्दाफाश करने का काम किया। जार लाख चाहकर भी बोल्शेविक पार्टी को नष्ट नहीं कर सका। और न ही करेंस्की हुकूमत ही ऐसा कर

पाई। और जैसे ही क्रान्तिकारी संकट और उभार का काल आया, पार्टी ने उसका सही ढंग से उपयोग करके मजदूरों को शस्त्र-सज्जित करने का काम किया, सेना के बड़े हिस्से को अपने साथ ले लिया तथा शीतप्रासाद पर कब्जे से इतिहास का एक नया अध्याय लिखना शुरू कर दिया।

आज अक्टूबर क्रान्ति का नया संस्करण रचने के लिए संकल्पबद्ध सर्वहारा क्रान्तिकारियों के लिए जरूरी है कि वे बोल्शेविक पार्टी जैसी इस्पाती सांचे में ढली क्रान्तिकारी पार्टी खड़ी करने की कोशिश करें, जो वैचारिक रूप से सुदृढ़ हो, जो कैडर-आधारित पार्टी हो, पेशेवर क्रान्तिकारी जिसके मेरुदण्ड हों, जो संघर्ष के हर रूप को अपनाने के लिए तथा अन्तिम निर्णायक संघर्ष के लिए शुरू से ही तैयार हो तथा कानूनी-संसदीय विभ्रमों का शिकार न हो। यह पार्टी जनवादी केन्द्रीयता के बोल्शेविक उसूलों पर ही संगठित हो सकती है। ऐसी ही पार्टी ट्रेड यूनियनों और जनता के सभी वर्गों के जनसंगठनों को क्रान्तिकारी ढंग से संगठित कर सकती है, सर्वहारा वर्ग के साथ जनता के सभी वर्गों का संयुक्त मोर्चा कायम कर सकती है और लम्बी तैयारी तथा अभ्यास के बाद, अनुकूल समय को पहचान कर आम बगावत का आह्वान कर सकती है। अक्टूबर क्रान्ति की इस शिक्षा को भुलाने वाले लोग लेनिन का नाम लेते हुए भी वास्तव में काउत्स्की, ख्रुश्चेव और देङ सियाओ-पिङ के अनुगामी होते हैं जो वास्तव में पूंजीवादी व्यवस्था की दूसरी-तीसरी सुरक्षा पंक्ति की भूमिका निभाते हैं। समाजवाद की पराजय में अहम भूमिका निभाकर इन्होंने पूंजीवाद की "ऐतिहासिक" सेवा की है और अभी भी ये अपने काम में लगे हुए हैं। मजदूर वर्ग को इनसे सावधान रहना होगा।

महान अक्टूबर क्रान्ति के पीछे एक मूल बात तपे-तपाये बोल्शेविक क्रान्तिकारियों की जनता के प्रति गहरी निष्ठा थी। लम्बे समय तक तरह-तरह के प्रयोग करते हुए उन्होंने सर्वहारा वर्ग की आर्थिक-राजनीतिक मांगों को उठाकर संघर्ष के तरीके ईजाद किये और साथ ही सतत् राजनीतिक प्रचार की कार्रवाई चलाते हुए उन्नत चेतना वाले मजदूरों के बीच से कम्युनिस्ट क्रान्तिकारियों की हरावल पांतों में कुर्बानी के जज्बे से लैस सिपाही भरती किये।

बोल्शेविकों ने मध्यमवर्गीय भटकाव के खिलाफ अन्त तक समझौताहीन संघर्ष चलाया। गांव के गरीबों के बीच भी उन्होंने लगातार कम्युनिस्ट प्रचार की कार्रवाई चलाई और गरीब तथा मध्यम किसान को क्रान्ति का दोस्त माना, पर भू-स्वामित्व के प्रति किसानी आस्था और प्रतिक्रियावादी किसानी कूपमण्डूकता के खिलाफ संघर्ष में उन्होंने कभी कोताही नहीं की।

बोल्शेविक क्रान्ति की सफलता के पीछे, एक मूल कारण यह भी था कि परिस्थितियों के किसी भी मूल्यांकन या क्रान्ति के कार्यक्रम के किसी भी पहलू को जड़सूत्र के समान पकड़कर बैठ जाने के बजाय लेनिन और उनके कामरेड ठोस परिस्थितियों का ठोस विश्लेषण करके क्रान्ति की रणनीति और रणकौशल में लगातार बदलाव करते रहते थे।

एक उदाहरण लें। क्रान्तिपूर्व दो दशकों के दौरान बोल्शेविक पार्टी ने अपने भूमि-कार्यक्रम में दर्जनों सुधार किये और जार के शासन द्वारा चलाये गये प्रतिवादी भूमि सुधार के एक-एक कदम को अपने अध्ययन का विषय बनाया। क्रान्ति के बाद समाजवादी क्रान्तिकारियों की तमाम सही बातों को उन्होंने बेहिचक अपना लिया। इसके समान्तर, भारत के कम्युनिस्टों का व्यवहार देखें। कम्युनिस्ट पार्टी बनने से लेकर तेलंगाना संघर्ष तक भूमि प्रश्न पर कोई सुसंगत लेखन या बहस मौजूद ही नहीं है। तेलंगाना संघर्ष के बाद हुए जमींदारी उन्मूलन से लेकर नक्सलबाड़ी उभार के बाद कृषि क्षेत्र में हुए भारी पूंजी निवेश की नीतियों और विभिन्न पार्टियों की सरकारों द्वारा किये गये पूंजीवादी भूमि सुधारों पर कोई भी सुसंगत बहस नहीं हुई। दूसरे महायुद्ध के बाद की आधी सदी के अहम बदलावों के बावजूद यहां के कम्युनिस्ट क्रान्तिकारियों का आज भी यह मानना है कि भारत आज भी एक अर्द्ध-सामन्ती-अर्द्ध-औपनिवेशिक देश है जहां भूमि क्रान्ति का प्रश्न केन्द्रीय है।

विडम्बना तो यह है कि इस स्थापना पर जब प्रश्न भी उठाये गये तो उन्हें महज कुछ फतवे देकर, कुछ लेबल चस्पां करके दरकिनार कर दिया गया।

ठोस परिस्थितियों का लगातार विश्लेषण करने और अपनी रणनीति में जरूरी तब्दीली के लिए बोल्शेविकों के तैयार रहने का सबसे जीता-जागता उदाहरण है—लेनिन की अप्रैल थीसिस, क्रान्ति की तैयारी और फिर एकदम सटीक समय पर आम बगावत का आह्वान। फरवरी में जार की सत्ता के पतन के बाद केरेन्स्की सरकार सत्तारूढ़ हुई और महज दो माह बाद लेनिन इस नतीजे पर पहुंचे कि रूस में समय सर्वहारा समाजवादी क्रान्ति के अनुकूल है। यदि एकदम सटीक मूल्यांकन के आधार पर बोल्शेविकों ने सही समय पर फैसलाकुन चोट नहीं की होती तो केरेन्स्की की बुर्जुआ हुकूमत को संभल जाने का मौका मिल जाता और उसे यूरोपीय पूंजीवादी ताकतों से मदद भी मिल जाती।

●

बोल्शेविकों की सफलता का एक बुनियादी कारण उनकी विचारधारात्मक तैयारी और अपनी पांतों में समय-समय पर सिर उठाने वाले गैर सर्वहारा विचारों के विरुद्ध उनका सतत् विचारधारात्मक संघर्ष रहा। क्रान्ति की सफलता की बुनियादी गारण्टी के तौर पर लेनिन ने पार्टी की विचारधारात्मक समझ की गहराई और दृढ़ता पर लगातार बल दिया और विचारधारात्मक संघर्षों में विरोधी को कभी भी रत्तीभर छूट नहीं दी। ऐसे किसी भी संघर्ष को उन्होंनें कभी भी एक मिनट के लिए टाला नहीं।

बोल्शेविक क्रान्ति की तैयारियों में सर्वोपरि विचारधारात्मक तैयारी ही थी। मेन्शेविकों ने और प्लेखानोव ने जब संगठन के ढांचे को जन-पार्टी के आधार पर एक बुर्जुआ ढंग-ढर्रे पर ढालना चाहा तो उन पर करारी चोट करते हुए लेनिन ने अपना रास्ता अलग कर लिया। इसी तरह दूसरे इण्टरनेशनल में कार्ल काउत्स्की की रहनुमाई में यूरोप के

अधिकांश कम्युनिस्टों ने जब अर्थवाद, संसदवाद और ट्रेड यूनियनवाद का रास्ता पकड़ा, जब उन्होंने राज्य और क्रान्ति विषयक मार्क्सवाद की बुनियादी शिक्षाओं में तोड़-मरोड़ की कोशिश की तथा जब उन्होंने अपने सांगठनिक ढांचे को पूरी तरह खुला और कानूनी बनाकर उसे बुर्जुआ राज्यसत्ता की मर्जी पर छोड़ दिया तो लेनिन ने अलग-थलग पड़ जाने का खतरा मोल लेकर भी उनके विरुद्ध फैसलाकुन संघर्ष चलाया और दूसरे इण्टरनेशनल से अपना रास्ता अलग कर लिया। इसके ठीक बाद सम्पन्न अक्टूबर क्रान्ति ने लेनिन के मार्ग को सही सिद्ध किया और बुजुर्ग खुर्राट काउत्स्की अपने चोले-चपाटों सहित इतिहास की कचड़ा-पेटी के हवाले हो गया। याद दिलाने की जरूरत नहीं कि आगे चलकर टीटो और ख्रुश्चेव के चेलों का भी यही हश्र हुआ तथा अभी से यह घोषणा की जा सकती है कि देङ सियाओ-पिङ के अनुयायियों की भी यही गत होनी है। अक्टूबर क्रान्ति के नये संस्करण अपने निर्माण की प्रक्रिया में ही संसदवादी-अर्थवादी वामपन्थ, यानी सामाजिक जनवाद और संशोधनवाद के सभी रूपों के ताबूत में आखिरी कील ठोंकने का काम करेंगे। विचारधारात्मक संघर्ष में सामाजिक जनवाद से एक-एक मोर्चा लड़कर ही, बोल्शेविक क्रान्ति की सफलता की मंजिल तक एक-एक कदम आगे बढ़े। इतिहास का यह सबक आज हमारे लिए लेनिन के समय से भी कहीं अधिक प्रासंगिक हो उठा है।

●

आज इस सदी के अन्तिम वर्षों में पीछे मुड़कर अक्टूबर क्रान्ति की ऐतिहासिक महत्ता के बारे में जब हम सोचते हैं तो निचोड़ के तौर पर इस युगान्तरकारी घटना की कुछ ऐसी अहम शिक्षाओं को रेखांकित किया जा सकता है, जिन्हें उत्तरवर्ती क्रान्तियों ने भी अपनी सफलताओं-असफलताओं से सत्यापित किया।

(1) अक्टूबर क्रान्ति ने मार्क्सवाद की इस बुनियादी शिक्षा को सत्यापित किया और यह आज भी सही है कि सर्वहारा क्रान्तियां महज बगावत नहीं बल्कि सचेतन क्रान्तियां ही हो सकती हैं। इसके लिए मजदूर वर्ग के हिरावल के तौर पर देश स्तर पर एक ऐसी एकीकृत क्रान्तिकारी पार्टी का होना अनिवार्य है, जो प्रकृति और समाज के अध्ययन के सारतत्व के रूप में अर्जित सर्वहारा क्रान्ति के विज्ञान से—मार्क्सवाद-लेनिनवाद की विचारधारा से लैस हो।

(2) सर्वहारा वर्ग की पार्टी विचारधारात्मक शुद्धता सतत् विचारधारात्मक संघर्षों से ही अर्जित कर सकती है। एक पूंजीवादी समाज के भीतर ही पैदा होने और काम करने के चलते पार्टी में गैरसर्वहारा प्रवृत्तियां और विचार लगातार सिर उठाते रहते हैं। केवल आलोचना-आत्मलोचना और दो लाइनों के संघर्ष के द्वारा ही इनका सफाया किया जा सकता है। लेनिन ने यदि मेन्शेविकों, प्लेखानोव और काउत्स्की के खिलाफ संघर्ष नहीं किया होता तो क्रान्ति करने के बजाय बोल्शेविक पार्टी भी सी.पी.आई.-सी.पी.एम.

जैसी संशोधनवादी, अर्थवादी, संसदमार्गी पार्टी बनकर रह गई होती। सामाजिक जनवाद या दक्षिणपन्थी अवसरवाद से हर लड़ाई लड़कर ही हम भी आज सही ढंग से एक क्रान्तिकारी पार्टी खड़ी करने की दिशा में एक-एक कदम आगे बढ़ सकते हैं। लेनिन की इस शिक्षा को आज याद रखना जरूरी है कि मार्क्सवादी केवल वही है जो वर्ग-संघर्ष के साथ ही सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को भी स्वीकार करता है। आज कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी शिविर के भीतर भी दक्षिणपन्थी सिद्धान्त और व्यवहार की प्रवृत्तियां और रुझानें बहुतायत में सिर उठा रही हैं, कठिन विचारधारात्मक संघर्ष में इनका निर्मूलन किये बगैर क्रान्तिकारियों की देशव्यापी एकता कतई नहीं कायम की जा सकती।

(3) उपरोक्त बिन्दु के साथ ही यह याद रखना जरूरी है कि अतिवामपन्थी भटकाव भी साररूप में मध्यवर्गीय जल्दबाजी, अराजकतावाद या जनता में आस्था न रखने की ही प्रवृत्ति से पैदा होता है और लेनिन ने इसे "बचकाना मर्ज" की संज्ञा दी थी। सर्वहारा वर्ग और उसके सहयोगी वर्गों के व्यापक जनसंगठन खड़ा किये बगैर, उनकी आर्थिक और राजनीतिक मांगों को लेकर संघर्ष करते हुए क्रान्तिकारी प्रचार द्वारा उनको तैयार किये बगैर, किसी भी रूप में मुट्ठी भर क्रान्तिकारी यदि अपनी कुर्बानियों और बहादुरी के बूते पर राज्यसत्ता पलट देना चाहते हैं या यह सोचते हैं कि उनके संघर्षों-कुर्बानियों से प्रेरित जनता इंकलाब के लिए उठ खड़ी होगी तो यह गलत है। यह वामपन्थी दुस्साहसवादी सोच है। नक्सलबाड़ी के शानदार जनउभार के बाद, इसी भटकाव के चलते पार्टी-निर्माण व गठन तथा क्रान्तिकारी जन-कार्य भारी ऐतिहासिक नुकसान उठा चुका है। आज भी, हालांकि दक्षिणपन्थी भटकाव का खतरा मुख्य है, पर अतिवामपन्थी, अराजकतावादी भटकाव की धाराएं क्रान्तिकारी आन्दोलन में मौजूद हैं। लेनिन की शिक्षाओं के आलोक में इनके विरुद्ध संघर्ष भी जरूरी है।

(4) हमारे देश में आज औद्योगिक सर्वहारा वर्ग लगभग पूरी तरह अर्थवाद और ट्रेड-यूनियनवाद की जकड़बन्दी में उलझा हुआ है। ट्रेड यूनियन आन्दोलन पूरी तरह संशोधनवादी वामपन्थी दलों ओर पूंजीवादी पार्टियों की गिरफ्त में है। सर्वहारा वर्ग को इस जकड़बन्दी से मुक्त करके ट्रेड यूनियन आन्दोलन को क्रान्तिकारी दिशा दिये बिना तथा सर्वहारा वर्ग के बीच क्रान्तिकारी राजनीतिक प्रचार की कार्रवाई लगातार चलाये बिना न तो सर्वहारा वर्ग की सही-सच्ची पार्टी खड़ी की जा सकती है और न ही सर्वहारा क्रान्ति की दिशा में एक कदम भी आगे बढ़ा जा सकता है।

भारत में एक सच्ची लेनिनवादी पार्टी खड़ी करने में वही सफल हो सकेंगे जो मजदूरों को संगठित करते हुए आर्थिक मांगों के साथ ही राजनीतिक अधिकारों के लिए भी आन्दोलन खड़े करें और साथ ही मजदूर वर्ग के बीच लगातार राजनीतिक प्रचार की कार्रवाई चलाते हुए उनके बीच के उन्नत तत्वों को क्रान्तिकारी पार्टी में शामिल करें। क्रान्तिकारियों को तमाम बुर्जुआ और संशोधनवादी ट्रेड-यूनियनों के भीतर क्रान्तिकारी मजदूरों के सेल और केन्द्रक गठित करके काम करना चाहिये और अवसरवादी नेतृत्व

को लगातार अलग-थलग करने की कोशिश करनी चाहिये। परिस्थिति के अनुसार, विभिन्न रूपों में मजदूरों के अध्ययन मण्डल और रात्रि स्कूल भी संगठित किये जाने चाहिये। मजदूर वर्ग के अगुवा तत्वों की पार्टी-भरती के द्वारा पार्टी-निर्माण के कार्य को पुख्ता आधार देने के लिए, क्रान्तिकारी राजनीति के व्यापक प्रचार के लिए और क्रान्तिकारी ग्रुपों की कतारों तक पार्टी निर्माण एवं गठन के कार्यभार के विविध पहलुओं, समस्याओं तथा इससे जुड़ी बहसों को पहुंचाने के लए एक क्रान्तिकारी मजदूर अखबार को भारत में भी वही भूमिका निभानी है जो रूस में 'इस्क्रा' ने और फिर उसके उत्तराधिकारी समानधर्मा अखबारों ने निभाई।

(5) **केवल वही पार्टी सच्ची क्रान्तिकारी पार्टी हो सकती है जो अपने जन्मकाल** से ही राज्यसत्ता के हर कोप-कहर का सामना करने के लिए तैयार हो। ऐसी पार्टी की सदस्यता सिर्फ गुप्त ही हो सकती है और वह ऐक्टिविस्ट स्तर से नीचे नहीं दी जा सकती। ऐसी पार्टी के मेरुदण्ड सिर्फ पेशेवर क्रान्तिकारी (पूरावक्ती कार्यकर्ता) ही हो सकते हैं। खुले और कानूनी दायरों में, गुंजाइश होने पर, काम करती हुई भी एक क्रान्तिकारी सर्वहारा पार्टी पूरी तरह कानूनी और संसदीय पार्टी कदापि नहीं हो सकती। उसका ढांचा और कार्यप्रणाली हर-हमेशा गुप्त रहनी चाहिये। ऐसी पार्टी केवल जनवादी केन्द्रीयता के सांगठनिक उसूलों पर ही गठित की जा सकती है।

भारत के सर्वहारा क्रान्तिकारियों के कई ग्रुप आज लेनिन और अक्टूबर क्रान्ति की इन बुनियादी शिक्षाओं की अवेहलना कर रहे हैं। यह बेहद खतरनाक है और पतन की ओर ले जाने वाला है।

(6) **अक्टूबर क्रान्ति की यह शिक्षा आज हमारे लिए बेहद उपयोगी है कि विचारधारा** के प्रश्न पर अडिग रहते हुए उसी के आलोक में देश-विशेष की ठोस परिस्थितियों का ठोस विश्लेषण किया जाना चाहिये और क्रान्ति का कार्यक्रम निर्धारित किया जाना चाहिये। अक्टूबर क्रान्ति की यह मूल्यवान शिक्षा है कि उसूलों में एकदम अनम्य रहते हुए कार्यनीति या रणकौशल के प्रश्नों पर अधिकतम सम्भव लचीला रुख अपनाया जाना चाहिये, तभी हर परिस्थिति का क्रान्ति की तैयारी के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

(7) **अपने देश की ठोस परिस्थितियों के आधार पर यह तय करना बेहद जरूरी** होता है कि सर्वहारा क्रान्ति के मित्र कौन हैं और शत्रु कौन? सर्वहारा वर्ग, अपने मित्र वर्गों को—मुख्यतः गांव के गरीबों को साथ लिये बगैर, उनके साथ संयुक्त मोर्चा बनाये बगैर कतई क्रान्ति नहीं कर सकता, यह बोल्शेविक क्रान्ति की एक बुनियादी शिक्षा है।

समाजवाद की आज की हार एक अस्थायी परिघटना है। यह कुछ समय की बात है। अक्टूबर क्रान्ति की मशाल बुझी नहीं है। बुझ ही नहीं सकती। दुनिया का सर्वहारा आगे बढ़ेगा और इसके नये संस्करण का निर्माण करेगा। पूंजीवाद के रोग और संकट लाइलाज हैं और उनका अन्त समाजवाद ही करेगा—पूंजीवाद का ही अन्त करके। नई

शताब्दी एक ऐसे ही भूकम्पकारी युग के रूप में आ रही है।

लेनिन ने साम्राज्यवाद के दौर में पूरब को क्रान्ति के तूफान के केन्द्र के रूप में देखा था और चीन की क्रान्ति से तीन दशक पहले 'एशिया के जागरण' के चिह्न देखे थे। साम्राज्यवादी लूट के खुला चरागाह एशिया में आज फिर एक नये जागरण के संकेत मिल रहे हैं।

क्या यह जागृति एक नई सर्वहारा क्रान्ति का सवेरा ला सकेगी? क्या सर्वहारा क्रान्तियों के नये चक्र में भारत का सर्वहारा वर्ग दुनिया के मजदूरों के अग्रिम दस्तों में शामिल हो सकेगा?—इसका जवाब हमें अपने ठोस कार्यों से देना होगा, फौलादी संकल्पों से देना होगा।

1905-07 की रूसी क्रान्ति की खून से लथपथ हार के बाद लेनिन ने अपने जीवन की एकमात्र कविता लिखी थी जिसकी अन्तिम पंक्तियों के उद्दाम आशावाद को अक्टूबर क्रान्ति ने साकार कर दिखाया। विश्व सर्वहारा क्रान्तियों के पहले संस्करणों की हार के बाद, उम्मीदों से लबरेज इन पंक्तियों को हम इस विश्वास के साथ दुहराते हैं कि नई सदी की नई सर्वहारा क्रान्तियां इन्हें अवश्य साकार करेंगी क्योंकि यही इतिहास की गति है ओर यही इतिहास का सन्देश है—

हिम्मत से सीना तानो!
ये बुरे दिन जल्दी ही छूट जायेंगे
आजादी के दुश्मन के खिलाफ खड़े हो जाओ
एकजुट होकर!
बसन्त आयेगा...वह आ रहा है.. वह आ रहा है
अनोखी खूबसूरत हमारी बहुवांछित
वह लाल आजादी
आगे आ रही है! देखो इधर
हमारी ओर...

('बिगुल', नवम्बर 1998, फरवरी '99 और मार्च-अप्रैल '99 में धारावाहिक प्रकाशित)

आग्नेय अक्टूबर

बोल्शेविकों ने विद्रोह की जोरदार तैयारियां शुरू कीं। लेनिन ने कहा कि दोनों राजधानियों-मास्को और पेत्रोग्राद—में मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियतों में बहुमत हासिल करने के बाद, बोल्शेविक अपने हाथ में राज्यसत्ता ले सकते हैं, और उन्हें लेना चाहिए। तय किये हुए रास्ते पर नजर डालते हुए, लेनिन ने इस बात पर जोर दिया कि 'जनता का बहुमत हमारे साथ है।' अपने लेखों और केन्द्रीय समिति और बोल्शेविक संगठनों के नाम अपने खतों में, लेनिन ने विद्रोह की एक विस्तृत योजना बनायी और बतलाया कि फौजी दस्ते, जल-सेना और रेड गार्ड दस्तों को किस तरह इस्तेमाल करना चाहिए, विद्रोह की सफलता निश्चित करने के लिए पेत्रोग्राद के किन मुख्य स्थानों पर कब्जा करना चाहिए, इत्यादि।

7 अक्टूबर को, लेनिन गुप्त रूप से फिनलैण्ड से पेत्रोग्राद आये। 10 अक्टूबर 1917 को, पार्टी की केन्द्रीय समिति की ऐतिहासिक बैठक हुई जिसमें अगले कुछ दिनों में सशस्त्र विद्रोह आरम्भ करने का फैसला किया गया। पार्टी की केन्द्रीय समिति के ऐतिहासिक प्रस्ताव में, जिसे लेनिन ने लिखा था, कहा गया था :

"केन्द्रीय समिति यह समझती है कि रूसी क्रान्ति की अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति (जर्मन जल-सेना में विद्रोह, जो समूचे यूरोप में विश्व समाजवादी क्रान्ति का चरम प्रदर्शन है, रूस की क्रान्ति का गला घोंटने के उद्देश्य से साम्राज्यवादियों के बीच शान्ति की धमकी), साथ ही सैनिक परिस्थिति (रूसी पूंजीपतियों और केरेन्स्की एण्ड कम्पनी का यह निश्चित फैसला कि पेत्रोग्राद जर्मनों को सौंप दिया जाये) और सोवियतों में सर्वहारा पार्टी का बहुमत हालिस करना,—यह सब और इसके साथ यह कि किसान-विद्रोह हो रहे हैं और आम जनता का विश्वास तेजी से पार्टी पर जम रहा है (मास्को के चुनाव), और अन्त में एक दूसरे कार्निलोव काण्ड के लिए जो खुली तैयारी हो रही है (पेत्रोग्राद से फौजें हटाना, मास्को और मिंस्क में हमारी जनता की कार्रवाई वगैरह) पर विचार करें और फैसला करें।" (लेनिन, संकलित रचनाएं, अंग्रेजी संस्करण, खण्ड 2, पृष्ठ 135)

केन्द्रीय समिति के दो सदस्य, कामेनेव और जिनोवियेव, इस ऐतिहासिक प्रस्ताव के खिलाफ बोले और उन्होंने उसके विरुद्ध वोट दिया। मेन्शेविकों की तरह, वे पूंजीवादी

'बोल्शेविक पार्टी का इतिहास' किताब का अंश

संसदीय जनतंत्र का सपना देखते थे और मजदूर वर्ग पर यह कह कर कीचड़ उछालते थे कि समाजवादी क्रान्ति करने के लिए वह काफी मजबूत नहीं है, कि वह सत्ता हाथ में लेने के लिए काफी परिपक्व नहीं है।

हालांकि इस बैठक में त्रात्स्की ने सीधे इस प्रस्ताव के खिलाफ वोट नहीं दिया, फिर भी उसने एक संशोधन रखा जिससे विद्रोह की सम्भावना नहीं के बराबर हो जाती और विद्रोह निष्फल हो जाता। उसने प्रस्ताव रखा कि सोवियतों की दूसरी कांग्रेस शुरू होने से पहले विद्रोह शुरू न किया जाये। इस प्रस्ताव का मतलब था—विद्रोह में विलम्ब करना, उसकी तारीख जाहिर कर देना और अस्थायी सरकार को आगाह कर देना।

बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति ने विद्रोह का संगठन करने के लिए अपने प्रतिनिधियों को दोन्येत्स प्रदेश, यूराल, हैलसिंगफोर्स, क्रोन्स्तात, दक्षिण-पश्चिमी मोर्चा और दूसरी जगहों पर भेजा। पार्टी ने खास तौर से सूबों में विद्रोह का संचालने करने के लिए कामरेड बोरोशिलोव, मोलोतोव, जर्जिन्स्की, ओजानिकित्से, किरोव, कगानोविच, कुइवीशेव, फ्रुन्जे, यारोस्लाव्स्की और दूसरे साथियों को मुकर्रर किया। कामरेड ज्दानोव ने यूराल में शान्द्रिस्क की फौज में काम जारी रखा। केन्द्रीय समिति के प्रतिनिधियों ने सूबों के बोल्शेविक संगठनों के प्रमुख सदस्यों को विद्रोह की योजना बतायी और पेत्रोग्राद के विद्रोह का समर्थन करने के लिए उन्हें तैयार रहने के लिए बटोरा।

पार्टी की केन्द्रीय समिति के निर्देश से, पेत्रोग्राद-सोवियत की एक क्रान्तिकारी फौजी कमेटी बनायी गयी। यह संस्था विद्रोह का कानूनी तौर पर चलने वाला हेडक्वार्टर बन गयी।

उधर क्रान्ति-विरोधी भी जल्दी-जल्दी अपनी शक्ति बटोर रहे थे। फौज के अफसरों ने एक क्रान्ति-विरोधी संगठन बनाया, जिसका नाम अफसरों की सभा था। हर जगह क्रान्ति विरोधियों ने लड़ाकू दस्ते बनाने के लिए हेडक्वार्टर कायम किये। अक्टूबर के अन्त तक, क्रान्ति विरोधियों की कमान में 43 लड़ाकू दस्ते बन गये। सेण्ट जार्ज के क्रास को मानने वालों के खास दस्ते बनाये गये।

केरेन्स्की की सरकार ने शासन केन्द्र पेत्रोग्राद से मास्को ले जाने के सवाल पर विचार किया। इससे स्पष्ट हो गया कि शहर में विद्रोह रोकने के लिए वह पेत्रोग्राद को जर्मनों के हाथ सौंपने की तैयारी कर रही है। पेत्रोग्राद के मजदूरों और सैनिकों के विरोध ने अस्थायी सरकार को पेत्रोग्राद में ही रहने पर मजबूर किया।

16 अक्टूबर को, पार्टी की केन्द्रीय समिति की एक विस्तृत बैठक हुई। इस बैठक में विद्रोह का संचालन करने के लिए एक पार्टी केन्द्र चुना गया, जिसके अगुआ कामरेड स्तालिन थे। यह पार्टी केन्द्र पेत्रोग्राद-सोवियत की क्रान्तिकारी फौजी कमेटी का प्रमुख नेतृत्व था और समूचे विद्रोह का अमली संचालन उसके हाथ में था।

केन्द्रीय समिति की बैठक में, समर्पणवादियों—जिनोवियेव और कामेनेव ने विद्रोह का फिर विरोध किया। यहां मुंहकी खाकर, उन्होंने विद्रोह के खिलाफ, पार्टी के खिलाफ

खुल्लमखुल्ला अखबारों में लिखा। 18 अक्टूबर को, मेन्शेविक अखबार *नोवाया जीज्न (नव जीवन)* ने कामेनेव और जिनोवियेव का बयान छापा, जिसमें कहा गया था कि बोल्शेविक विद्रोह की तैयारी कर रहे हैं और वे (कामेनेव और जिनोवियेव) समझते हैं कि यह दुस्साहसपूर्ण जुआ खेलना है। इस तरह, कामेनेव और जिनोवियेव ने दुश्मन को केन्द्रीय समिति का विद्रोह सम्बन्धी फैसला बता दिया; उन्होंने यह प्रकट कर दिया कि कुछ ही दिनों में विद्रोह शुरू करने की योजना बनायी गयी है। यह गद्दारी थी। इस सिलसिले में, लेनिन ने लिखा था : "कामेनेव और जिनोवियेव ने सशस्त्र विद्रोह के बारे में अपनी पार्टी की केन्द्रीय समिति का फैसला दगाबाजी से रोद्जियांको और केरेन्स्की को बतला दिया है।" लेनिन ने केन्द्रीय समिति के सामने जिनोवियेव और कामेनेव को पार्टी से निकालने का सवाल रखा।

गद्दारों से चेतावनी पाकर, क्रान्ति के दुश्मन तुरन्त ही, इस बात के उपाय करने लगे कि विद्रोह को रोक दें और क्रान्ति के दुश्मन तुरन्त ही इस बात के उपाय करने लगे कि विद्रोह को रोक दें और क्रान्ति के संचालक दल—बोल्शेविक पार्टी—का नाश कर दें। अस्थायी सरकार ने एक गुप्त बैठक बुलायी, जिसमें बोल्शेविकों का मुकाबला करने के लिए क्या उपाये किये जायें, इसका फैसला हुआ। 19 अकटूबर को, अस्थायी सरकार ने युद्ध के मोर्चे से जल्दी-जल्दी फौजें पेत्रोग्राद बुलायीं। सड़कों पर भारी पहरा लगा दिया गया। क्रान्ति विरोधी खास तौर से मास्को में भारी फौज इकट्ठी करने में कामयाब हुए। अस्थायी सरकार ने एक योजना बनायी कि सोवियतों की दूसरी कांग्रेस शुरू होने से पहले बोल्शेविक केन्द्रीय समिति के हेडक्वार्टर स्मोल्नी पर हमला किया जाये और उस पर कब्जा कर लिया जाये और बोल्शेविक संचालन-केन्द्र का नाश कर दिया जाये। इसी उद्देश्य से, हुकूमत ने पेत्रोग्राद में वह फौज बुलाई जिसकी वफादारी पर उसे भरोसा था।

लेकिन, अस्थायी सरकार की जिन्दगी के दिन और घण्टे भी गिनती के रह गये थे। समाजवादी क्रान्ति की विजय-यात्रा को अब कोई भी न रोक सकता था।

21 अक्टूबर को, बोल्शेविकों ने सभी क्रान्तिकारी फौजी दस्तों के पास क्रान्तिकारी फौजी समिति के कमिसार भेजे। विद्रोह होने से पहले के बचे हुए दिनों में फौजी दस्तों, मिलों और कारखानों में कार्रवाई की जोरदार तैयारी की गयी। युद्ध पोत *अव्रोरा* और *जारियास्वोबोदी* के लिए भी निश्चित निर्देश भेजे गये।

पेत्रोग्राद सोवियत की एक बैठक में, त्रात्स्की ने डींग हांकने की जीम में दुश्मन को वह तारीख बतला दी जब बोल्शेविक सशस्त्र विद्रोह शुरू करने वाले थे। केरेन्स्की सरकार विद्रोह को असफल न कर दे, इसलिए पार्टी की केन्द्रीय समिति ने फैसला किया कि निश्चित किये हुए समय से पहले ही विद्रोह शुरू कर दिया जाये और आखिरी मंजिल तक ले जाया जाये। उसने विद्रोह की तारीख सोवियतों की दूसरी कांग्रेस के शुरू होने से पहले के दिन रखी।

24 अक्टूबर (6 नवम्बर) को सुबह तड़के, केरेन्स्की ने हमला शुरू कर दिया। उसने बोल्शेविक पार्टी के केन्द्रीय पत्र *रबोचीपूत (मजदूर पथ)* को बन्द करने का हुक्म दिया और सम्पादकीय दफ्तर और बोल्शेविकों के छापेखाने पर हथियारबन्द गाड़ियां भेजीं। लेकिन 10 बजे सबेरे तक, कामरेड स्तालिन के निर्देश पर, रेड गार्डो के दस्तों और क्रान्तिकारी सैनिकों ने हथियारबन्द गाड़ियों को पीछे ठेल दिया और छापेखाने और *रबोचीपूत* के सम्पादकीय दफ्तरों पर और ज्यादा पहरा बिठा दिया। लगभग 11 बजे सबेरे *रबोचीपूत* प्रकाशित हुआ, जिसमें अस्थायी सरकार का तख्ता उलट देने के लिए आह्वान था। उसी समय, विद्रोह के पार्टी केन्द्र के निर्देश से क्रान्तिकारी सैनिकों और रेड गार्डो के दस्ते स्मोल्नी की तरफ दौड़ाये गये।

विद्रोह शुरू हो गया।

24 अक्टूबर की रात को, लेनिन स्मोल्नी आ पहुंचे और उन्होंने खुद विद्रोह के संचालन का भार संभाला। उस रात भर फौज के क्रान्तिकारी दस्ते और रेड गार्डो के जत्थे बराबर स्मोल्नी आते रहे। बोल्शेविकों ने शरद प्रासाद घेरने के लिए, जहां अस्थायी सरकार ने अपना अड्डा बनाया था, उन्हें राजधानी के केन्द्र की तरफ भेजा।

25 अक्टूबर (7 नवम्बर) को, रेड गार्डो के दस्तों और क्रान्तिकारी सैनिकों ने रेलवे स्टेशनों, डाकखानों, तारघरों, मंत्री-गृहों और राज्य बैंक पर कब्जा कर लिया।

प्रेद पार्लियामेण्ट भंग कर दी गयी।

बोल्शेविक केन्द्रीय समिति और पेत्रोग्राद सोवियत का हैड क्वार्टर, स्मोल्नी क्रान्ति का हेडक्वार्टर बन गया, जहां से लड़ाई के बारे में सभी हुकुम भेजे जाते थे।

पेत्रोग्राद के मजदूरों ने उन दिनों दिखला दिया कि बोल्शेविक पार्टी की देखरेख में उन्होंने कैसी महान शिक्षा पाई है। फौज के क्रान्तिकारी दस्तों ने, जिन्हें बोल्शेविकां के काम ने विद्रोह के लिए तैयार किया था, नपे-तुले ढंग से लड़ाई की आज्ञाओं का पालन किया और वे रेड गार्डो के दस्तों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर लड़े। जल सेना फौज से पीछे न रही। क्रोन्स्तात बोल्शेविक पार्टी का गढ़ था और बहुत दिन पहले ही अस्थायी सरकार का प्रभुत्व मानने से इंकार कर चुका था। युद्ध पोत *अरोरा* ने अपनी तोपें शरद प्रासाद की तरफ मोड़ दीं और, 25 अक्टूबर को, उनकी घन गरजन ने एक नया युग आरम्भ किया, महान समाजवादी क्रान्ति का युग आरम्भ किया।

25 अक्टूबर (7 नवम्बर) को, बोल्शेविकों ने "रूस के नागरिकों के नाम" एक घोषणापत्र निकाला। इसमें कहा गया था कि पूंजीवादी अस्थायी सरकार हटा दी गयी है और राज्यसत्ता सोवियतों के हाथ में आ गयी है।

अस्थायी सरकार ने कैडेटों और लड़ाकू जत्थों की छत्रछाया में शरद प्रासाद में शरण ली थी। 25 अक्टूबर की रात को क्रान्तिकारी मजदूरों, सैनिकों और जहाजियों ने शरद प्रासाद पर हल्ला बोल कर कब्जा कर लिया और अस्थायी सरकार को गिरफ्तार कर लिया।

पेत्रोग्राद में सशस्त्र विद्रोह की विजय हुई।

सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस 25 अक्टूबर (7 नवम्बर) 1917 की शाम को 10 बजकर 45 मिनट पर स्मोल्नी में शुरू हुई, जबकि पेत्रोग्राद का विद्रोह विजय गौरव से दमक रहा था और राजधानी में सत्ता सचमुच पेत्रोग्राद सोवियत के हाथ में आ गयी थी।

कांग्रेस में बोल्शेविकों को भारी बहुमत मिला। मेन्शेविकों, बुन्दवादियों और दक्षिणपन्थी समाजवादी क्रान्तिकारियों ने देखा कि अब उनके दिन बीत चुके हैं, इसलिए वे कांग्रेस से बाहर चले गये और उन्होंने ऐलान किया कि वे कांग्रेस के काम में हिस्सा लेने से इंकार करते हैं। सोवियतों की कांग्रेस में उनका एक बयान पढ़ा गया, जिसमें उन्होंनें अक्टूबर क्रान्ति को एक 'फौजी षड्यंत्र' बताया था। कांग्रेस ने मेन्शेविकों और समाजवादी क्रान्तिकारियों की निन्दा की और उनके चले जाने पर अफसोस करना तो दूर, उसका स्वागत किया। कांग्रेस ने ऐलान किया कि गद्दारों के चले जाने से अब वह मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सच्ची क्रान्तिकारी कांग्रेस हो गयी है।

कांग्रेस ने ऐलान किया कि सारी सत्ता सोवियतों के हाथ में आ गयी है। सोवियतों की दूसरी कांग्रेस के घोषणापत्र में कहा गया :

"मजदूरों, सैनिकों और किसानों के भारी बहुमत का समर्थन पाकर और पेत्रोग्राद में होने वाले मजदूरों और सैनिकों के सफल विद्रोह का समर्थन पाकर, कांग्रेस अपने हाथ में सत्ता लेती है।"

26 अक्टूबर (8 नवम्बर) 1917 की रात को, सोवियतों की दूसरी कांग्रेस ने *शान्ति सम्बन्धी आज्ञापत्र* स्वीकार किया। कांग्रेस ने युद्ध करने वाले देशों का आह्वान किया कि कम से कम तीन महीने के लिए सुलह कर लें, जिससे शान्ति की बातचीत की जा सके। कांग्रेस ने एक तरफ तो युद्ध करने वाले देशों की जनता और वहां की सरकारों से अपनी बात कही, दूसरी तरफ उसने "संसार के तीन प्रमुख राज्यों यानी ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी के वर्ग-चेतन मजदूरों से" अपील की। उसने इन मजदूरों से कहा कि वे "शान्ति के उद्देश्य को सफलता की मंजिल तक ले जाने में और साथ ही सभी तरह की गुलामी और शोषण से मेहनतकश और शोषित जनता की मुक्ति के उद्देश्य को सफलता की मंजिल तक ले जाने में" मदद करें।

उसी रात को, सोवियतों की दूसरी कांग्रेस ने *भूमिसम्बन्धी आज्ञापत्र* स्वीकार किया जिसमें कहा गया था : "भूमि पर जमींदारों की मिल्कियत बिना मुआवजे के तुरन्त खत्म की जाती है।" खेती के इस कानून का आधार किसानों का एक निर्देश पत्र (नकाज, मैण्डेट) था, जो अलग-अलग जगहों के किसानों के 242 मैण्डटों को मिला कर बनाया गया था। इसके अनुसार, जमीन पर व्यक्तिगत मिल्कियत हमेशा के लिए खत्म कर दी गयी और उसके बदले सार्वजनिक या राज्य की मिल्कियत कायम हुई। जमींदारों, जार के परिवार और मठों की जमीन बिना पैसा दिये हुए सभी मेहनतकशों को इस्तेमाल

के लिए देने का हक्म हुआ।

इस आज्ञापत्र से, किसानों ने अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति से 15 करोड़ देस्यातिन (40 करोड़ एकड़ से ऊपर) जमीन पायी जो पहले जमींदारों, पूंजीपतियों, जार के परिवार, मठों और गिरजाघरों के पास थी।

इसके अलावा, किसानों को उस लगान से मुक्त कर दिया गया जो वे जमींदारों को देते थे और जो सालाना 50 करोड़ स्वर्ण रूबल होता था।

खनिज पदार्थों के तमाम साधन (तेल, कोयला, धातुएं, वगैरह), जंगल और जलाशय जनता की सम्पत्ति हो गये।

अन्त में, सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस ने पहली सोवियत सरकार बनायी—जन कमिसारों की समिति बनायी जिसमें सभी बोल्शेविक थे। जन कमिसारों की पहली समिति के पहले सभापति लेनिन चुने गये।

इससे सोवियतों की दूसरी ऐतिहासिक कांग्रेस का काम खत्म हुआ।

कांग्रेस के प्रतिनिधि इधर-उधर बिखर गये, जिससे कि पेत्रोग्राद में सोवियतों की जीत की खबर फैला दें और सोवियतों की सत्ता सारे देश में फैलाने का काम निश्चित करें।

हर जगह सोवियतों के हाथ तुरन्त ही सत्ता नहीं आ गयी। जब पेत्रोग्राद में सोवियत सरकार बन चुकी थी, तब मास्को में कई दिन तक डटकर और घनघोर लड़ाई होती रही। सत्ता मास्को-सोवियत के हाथ में न जाये, इसके लिए क्रान्ति-विरोधी मेन्शेविक और समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टियों ने गद्दारों और कैडेटों से मिल कर मजदूरों और सैनिकों के खिलाफ हथियारबन्द लड़ाई शुरू कर दी। बागियों को हराने और मास्को में सोवियतों की सत्ता कायम करने में कई दिन लग गये।

खुद पेत्रोग्राद में और उसके कई जिलों में क्रान्ति की जीत के शुरू के दिनों में ही सोवियत सत्ता को खत्म करने की क्रान्ति विरोधी कोशिशें की गयीं। 10 नवम्बर 1917 को, केरेन्स्की ने, जो विद्रोह के समय पेत्रोग्राद से उत्तरी मोर्चे को भाग गया था, कई कज्जाक दस्ते इकट्ठे किये और जनरल क्रासनोव की कमान में उन्हें पेत्रोग्राद के खिलाफ भेजा। 11 नवम्बर 1917 को, एक क्रान्तिविरोधी संगठन ने पेत्रोग्राद में कैडेटों से बगावत करायी। इस संगठन के नेता समाजवादी क्रान्तिकारी थे, और उसका नाम रखा था—"पितृभूमि और क्रान्ति के उद्धार की कमेटी"। लेकिन, बिना ज्यादा कठिनाई के बगावत दबा दी गयी। एक ही दिन में, 11 नवम्बर की शाम तक, जहाजियों और रेड गार्डों के दस्तों ने कैडेट-विद्रोह दबा दिया और 13 नवम्बर को जनरल क्रासनोव पुलकोवो पहाड़ियों के पास हरा दिया गया। लेनिन ने व्यक्तिगत रूप से सोवियत-विरोधी बगावत दबाने का संचालन किया, जैसे उन्होंने व्यक्तिगत रूप से अक्टूबर विद्रोह का संचालन किया था। उनकी अटूट दृढ़ता और विजय में उनके शान्त विश्वास ने जनता को प्रेरित और संगठित किया। दुश्मन कुचल दिया गया। क्रासनोव गिरफ्तार कर लिया गया और

उसने 'वचन दिया' कि सोवियत सत्ता के खिलाफ लड़ाई वन्द कर देगा। और, 'वचन देने पर' वह छोड़ दिया गया। लेकिन जैसा कि आगे मालूम हुआ, जनरल ने अपना वचन तोड़ दिया। जहां तक केरेन्स्की का सम्बन्ध था, वह औरत का भेष बनाकर 'किसी अज्ञात दिशा में गायब' हो गया।

फौज के जनरल हेडक्वार्टर पर, मोगीलेव में प्रधान सेनापति जनरल दुखोनिन ने भी बगावत करने की कोशिश की। जब सोवियत सरकार ने उसे हुक्म दिया कि जर्मन कमान से सुलह करने के लिए तुरन्त बातचीत चलाओ, तो उसने इंकार कर दिया। इस पर, सोवियत सरकार के हुक्म से उसे हटा दिया गया। क्रान्ति विरोधी जनरल हेडक्वार्टर भंग कर दिया गया और खुद दुखोनिन को उसके खिलाफ विद्रोह करने वाले सैनिकों ने मार डाला।

पार्टी के भीतर कुछ नामी-गिरामी अवसरवादियों—कामेनेव, जिनोवियेव, राइकोव, शिलयापनीकोव, वगैरह—ने भी सोवियत सत्ता के खिलाफ धावा बोला। उन्होंने मांग की कि एक 'संयुक्त समाजवादी सरकार' बनायी जाये, जिसमें मेन्शेविक और समाजवादी क्रान्तिकारी भी शामिल किये जायें जिन्हें अक्टूबर क्रान्ति ने अभी-अभी परास्त किया था। 15 नवम्बर 1917 को, बोल्शेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति ने एक प्रस्ताव पास किया जिसमें इन क्रान्ति-विरोधी पार्टियों के साथ समझौता करना नामंजूर कर दिया गया और कामेनेव तथा जिनोवियेव को क्रान्ति का हड़ताल-तोड़क कहा गया। 17 नवम्बर को, पार्टी की नीति से असहमत होते हुए कामेनेव, जिनोवियेव, राइकोव और मिल्यूतिन ने ऐलान किया कि वे केन्द्रीय समिति से इस्तीफा देते हैं। उसी दिन, 17 नवम्बर को, नोगिन ने अपनी तरफ से और जन कमिसार समिति के सदस्यों—राइकोव, वी. मिल्यूतिन, तियोदोरोविच, ए. शिलयापनीकोव, डी. रियाजानोव, यूरेनेव और लारिन—की तरफ से ऐलान किया कि वे पार्टी की केन्द्रीय समिति की नीति से असहमत हैं और जन कमिसार समिति से इस्तीफा देते हैं। इन मुट्ठीभर गद्दारों के भाग खड़े होने से, अक्टूबर क्रान्ति के दुश्मनों के यहां खुशियां मनायी जाने लगीं। पूंजीपति और उनके पिट्ठू खुशी से फूल कर कहने लगे कि बोल्शेविज्म खत्म हो गया और बोल्शेविक पार्टी जल्द ही समाप्त होने वाली है। लेकिन इन मुट्ठीभर गद्दारों की वजह से, पार्टी एक क्षण के लिए भी विचलित न हुई। पार्टी की केन्द्रीय समिति ने घृणा के साथ उन्हें क्रान्ति से भाग खड़े होने वाला और पूंजीपतियों का साझीदार कहकर उनकी निन्दा की और अपने आगे के काम में लग गयी।

जहां तक 'वामपन्थी' समाजवादी क्रान्तिकारियों का सवाल था, वे किसान जनता पर अपना असर बनाये रखना चाहते थे। किसानों की हमदर्दी निश्चित रूप से बोल्शेविकों के साथ थी। इसलिए, 'वामपन्थी' समाजवादी क्रान्तिकारियों ने फैसला किया कि बोल्शेविकों से झगड़ा न करें और फिलहाल उनके साथ संयुक्त मोर्चा बनाये रहें। नवम्बर 1917 में, किसान सोवियतों की कांग्रेस हुई। उसने अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति से हासिल हुए

सभी लाभ स्वीकार किये और सोवियत सरकार के आज्ञा-पत्रों का समर्थन किया। 'वामपन्थी' समाजवादी क्रान्तिकारियों के साथ एक समझौता हुआ और उनमें से कई को जन कमिसार समिति में जगहें दी गयीं (कोलेगायेव, स्पिरिदोनोवा, प्रोश्यान और स्टाइनबर्ग)। लेकिन, यह समझौता ब्रेस्ट-लिटोव्स्क की संधि होने और गरीब किसानों की कमेटियां बनने तक ही कायम रहा। उसके बाद किसानों में गहरी दरार पड़ी। 'वामपन्थी' समाजवादी क्रान्तिकारी अधिकाधिक कुलक हित जाहिर करने लगे। उन्होंने बोल्शेविकों के खिलाफ बगावत की और सोवियत सत्ता ने उन्हें परास्त कर दिया।

अक्टूबर 1917 से फरवरी 1918 तक, देश के विशाल प्रदेशों में सोवियत क्रान्ति इतनी तेजी से फैली कि लेनिन ने उसे सोवियत सत्ता की 'विजय-यात्रा' कहा।

महान अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति विजयी हुई।

रूस में समाजवादी क्रान्ति की इस अपेक्षाकृत आसान विजय के कई कारण थे। नीचे लिखे हुए मुख्य कारण ध्यान देने योग्य हैं :

(1) अक्टूबर क्रान्ति का दुश्मन अपेक्षाकृत ऐसा कमजोर, ऐसा असंगठित और राजनीतिक रूप से ऐसा अनुभवहीन था जैसे कि रूसी पूंजीपति। रूसी पूंजीपति आर्थिक रूप से अब भी कमजोर थे और पूरी तरह सरकारी ठेकों पर निर्भर थे। उनमें राजनीतिक आत्मनिर्भरता और पहलकदमी इतनी न थी कि परिस्थिति से निकलने का रास्ता ढूंढ़ सकें। मसलन, बड़े पैमाने पर राजनीतिक गुटबन्दी और राजनीतिक दगाबाजी में उन्हें फ्रांसीसी पूंजीपतियों का सा तजुर्बा न था, न अंग्रेज पूंजीपतियों की तरह, उन्होंने विशद रूप से सोचे हुए चतुर समझौते करने की शिक्षा पायी थी। हाल ही में, उन्होंने जार से समझौता करने की कोशिश की थी। फरवरी क्रान्ति ने जार का तख्ता उलट दिया था और सत्ता खुद पूंजीपतियों के हाथ में आ गयी थी लेकिन बुनियादी तौर से घृणित जार की नीति पर ही चलने के सिवा उन्हें और कुछ न सूझ पड़ा। जार की तरह, उन्होंने 'विजय तक युद्ध करने' का समर्थन किया, हालांकि युद्ध चलाना देश की शक्ति से परे था और जनता तथा फौज दोनों युद्ध से बुरी तरह चूर हो चुके थे। जार की तरह, कुल मिलाकर वे भी रियासती जमीन बनाये रखने के पक्ष में थे, हालांकि जमीन की कमी और जमींदारों के जुवे के बोझ से किसान मर रहे थे। जहां तक उनकी मजदूर नीति का सम्बन्ध था, वे मजदूर वर्ग से नफरत करने में जार के भी कान काट चुके थे। उन्होंने कारखानेदारों के जुवे को बनाये रखने और मजबूत करने की ही कोशिश नहीं की, बल्कि उन्होंने बड़े पैमाने पर तालाबन्दी करके उसे असहनीय बना दिया।

कोई ताज्जुब नहीं कि जनता ने जार की नीति और पूंजीपतियों की नीति में कोई बुनियादी भेद नहीं देखा, और जो घृणा उसके दिल में जार के लिए थी वही पूंजीपतियों की अस्थायी सरकार के लिए हो गयी।

जब तक समाजवादी क्रान्तिकारी और मेन्शेविक पार्टियों का थोड़ा बहुत असर जनता पर था, तब तक पूंजीपति उन्हें पर्दे की तरह इस्तेमाल कर सकते थे और अपनी

सत्ता बनाये रख सकते थे। लेकिन, जब मेन्शेविकों और समाजवादी क्रान्तिकारियों ने जाहिर कर दिया कि वे साम्राज्यवादी पूंजीपतियों के दलाल हैं और इस तरह जनता में उन्होंने अपना असर खो दिया, तब पूंजीपतियों और उनकी अस्थायी सरकार का कोई मददगार न रहा।

(2) अक्टूबर क्रान्ति का नेतृत्व रूस के मजदूर वर्ग जैसे क्रान्तिकारी वर्ग ने किया। यह ऐसा वर्ग था जो संघर्ष की आंच में तप चुका था, जो थोड़ी ही अवधि में दो क्रान्तियों से गुजर चुका था और जो तीसरी क्रान्ति के शुरू होने से पहले शान्ति, जमीन, स्वाधीनता और समाजवाद के लिए संघर्ष में जनता का नायक माना जा चुका था। अगर क्रान्ति का नेता रूस के मजदूर वर्ग जैसा न होता, ऐसा नेता जिसने जनता का विश्वास पा लिया था, तो मजदूरों और किसानों की मैत्री न होती और इस तरह की मैत्री के बिना अक्टूबर क्रान्ति की विजय असम्भव होती।

(3) रूस के मजदूर वर्ग को क्रान्ति में गरीब किसानों जैसा समर्थ साथी मिला, जो किसान जनता का भारी बहुसंख्यक भाग था। जहां तक आम मेहनतकश किसानों का सवाल था, क्रान्ति के आठ महीनों का तजुर्बा बेकार नहीं गया। इस तजुर्बे की तुलना 'साधारण' विकास के बीसियों सालों के तजुर्बे से निस्सन्देह की जा सकती है। इन दिनों, उन्हें मौका मिला कि वे अमल में रूस की तमाम पार्टियों को परख लें और अपनी दिलजमई कर लें कि न तो कान्स्टीट्यूशनल डेमोक्रेट और न समाजवादी क्रान्तिकारी या मेन्शेविक ही जमींदारों से कोई गम्भीर झगड़ा मोल लेंगे, या किसानों के हित के लिए अपना बलिदान करेंगे, कि रूस में एक ही पार्टी है—बोल्शेविक पार्टी—जिसका जमींदारों से कोई सम्बन्ध नहीं है और जो उन्हें किसानों की जरूरतें पूरी करने के लिए कुचलने को तैयार है। सर्वहारा और गरीब किसानों की मैत्री का यह दृढ़ आधार था। मजदूर वर्ग और गरीब किसानों की इस मैत्री के कायम होने से, मध्यम किसानों की गति निश्चित हो गयी। ये मध्यम किसान बहुत दिन तक ढुलमुल रहे थे और अक्टूबर विद्रोह के शुरू होने से पहले ही पूरी तरह क्रान्ति की तरफ आये थे और उन्होंने गरीब किसानों से नाता जोड़ा था।

कहना न होगा कि इस मैत्री के बिना अक्टूबर क्रान्ति विजयी न होती।

(4) मजदूर वर्ग का नेतृत्व राजनीतिक संघर्षों में तपी और परखी हुई बोल्शेविक पार्टी जैसी पार्टी ने किया था। बोल्शेविक पार्टी इतनी साहसी पार्टी थी कि निर्णायक हमले में जनता का नेतृत्व कर सके। वह इतनी सावधान पार्टी थी कि मंजिल की तरफ जाने के रास्ते में ढंकी-मुंदी खाई-खन्दकों से बच कर निकल सके। ऐसी ही पार्टी विभिन्न क्रान्तिकारी आन्दोलनों को चतुराई से एक ही सामान्य क्रान्तिकारी धारा में मिला सकती थी। शान्ति के लिए आम जनवादी आन्दोलन, जातीय स्वाधीनता और जातीय समानता के लिए पीड़ित जातियों का आन्दोलन और पूंजीपतियों का तख्ता उलटने के लिए और सर्वहारा अधिनायकत्व कायम करने के लिए सर्वहारा वर्ग का

समाजवादी आन्दोलन—इन सबको ऐसी ही पार्टी एक सामान्य क्रान्तिकारी धारा में मिला सकती थी।

इसमें सन्देह नहीं कि इन विभिन्न क्रान्तिकारी धाराओं के एक ही सामान्य शक्तिशाली क्रान्तिकारी धारा में मिलने ने रूस में पूंजीवाद की तकदीर का फैसला कर दिया।

(5) अक्टूबर क्रान्ति ऐसे समय आरम्भ हुई जबकि साम्राज्यवादी युद्ध अभी जोरों पर था, जब कि प्रमुख पूंजीवादी राज्य दो विरोधी खेमों में बंटे हुए थे और जब परस्पर युद्ध में फंसे रहने और एक-दूसरे की जड़ें काटने में लगे रहने से, वे 'रूसी मामलों' में सफलता से दखल न दे सकते थे और सक्रिय रूप से अक्टूबर क्रान्ति का विरोध न कर सकते थे।

निस्सन्देह, अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति की जीत में इस बात से बहुत मदद मिली। ▣

('बिगुल', फरवरी 1998 और मार्च-अप्रैल '98 में धारावाहिक प्रकाशित)

राहुल फाउण्डेशन के नये प्रकाशन

1. तोलस्तोय के बारे में	लेनिन	8/-
2. उम्मीद एक ज़िन्दा शब्द है ('दायित्वबोध' के महत्वपूर्ण सम्पादकीय लेखों का संकलन)		60/-
3. एनजीओ : एक खतरनाक साम्राज्यवादी कुचक्र		20/-
4. कला-साहित्य विषयक एक भाषण और पांच दस्तावेज	माओ त्से-तुङ	12/-
5. दर्शन विषयक पांच निबन्ध	माओ त्से-तुङ	25/-
6. बोल्शेविक पार्टी का इतिहास		80/-
7. समाजवाद और युद्ध	लेनिन	10/-
8. साम्राज्यवादः पूंजीवाद की चरम अवस्था	लेनिन	25/-
9. राज्य और क्रान्ति	लेनिन	25/-
10. सर्वहारा क्रान्ति और गद्दार काउत्स्की	लेनिन	15/-
11. दूसरे इण्टरनेशनल का पतन	लेनिन	10/-
12. गांव के गरीबों से	लेनिन	10/-
13. मार्क्सवाद का विकृत रूप तथा साम्राज्यवादी अर्थवाद	लेनिन	10/-
14. कार्ल मार्क्स और उनकी शिक्षा	लेनिन	10/-
15. अक्टूबर क्रान्ति की मशाल	(बिगुल पुस्तिका-चार)	12/-
16. पेरिस कम्यून की अमर कहानी	(बिगुल पुस्तिका-पांच)	10/-
17. Selected Readings	Mao Tse-tung	65/-

राहुल फाउण्डेशन की ये किताबें भी जरूर पढ़ें

माओ त्से-तुङ की रचनाओं के उद्धरण

Quotations from Mao Tse-Tung

पार्टी साहित्य और पार्टी संगठन — लेनिन

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद — वी. अदोरात्सकी

राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त (दो खण्डों में)
(दि शंघाई टेक्स्टबुक आफ पोलिटिकल इकॉनमी) प्रत्येक खण्ड :

कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र — कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स

बुर्जुआ वर्ग पर सर्वतोमुखी अधिनायकत्व
लागू करने के बारे में — चाङ चुन-चियाओ

मई दिवस का इतिहास — अलेक्जेण्डर ट्रैक्टनबर्ग

अक्टूबर क्रान्ति और लेनिन — एल्बर्ट रीस विलियम्स

दायित्वबोध पुस्तिका श्रृंखला

अनश्वर हैं सर्वहारा संघर्षों की अग्निशिखाएं — दीपायन बोस

समाजवाद की समस्याएं, पूंजीवादी पुनर्स्थापना और
महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति — शशि प्रकाश

क्यों माओवाद — शशि प्रकाश

बिगुल पुस्तिका श्रृंखला

कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन और उसका ढांचा — वी.आई. लेनिन

मकड़ा और मक्खी — विल्हेल्म लीब्कनेख्त

ट्रेडयूनियन काम के जनवादी तरीके — सेर्जी रोस्तोवस्की

बिगुल पुस्तिकाएं, राहुल फाउण्डेशन और
परिकल्पना प्रकाशन की किताबें तथा
अन्य क्रान्तिकारी साहित्य प्राप्त करने के लिए
सम्पर्क करें :

जनचेतना

प्रगतिशील साहित्य का वितरण केन्द्र

■

डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020

■

काफी हाउस के पास, हजरतगंज, लखनऊ
(शाम 5 से 8)

■

जाफरा बाजार, गोरखपुर-273001

■

81, समाचार अपार्टमेण्ट, मयूर विहार फेज-एक, दिल्ली-110091

INDIAN INSTITUTE OF ...
122532
1/5/06

पूंजीवाद की यह जीत अन्तिम नहीं है ! समाजवाद की यह हार अन्तिम नहीं है !!

यह सन्नाटा तूफान की पूर्वबेला है ! टूटने भी लगा है यह सन्नाटा !!

मिट्टी में दबे हुए अंकुरित हो रहे हैं अक्टूबर क्रान्ति के नये संस्करण के बीज !

अमर नहीं है पूंजीवाद ! उसका संहार होगा नई समाजवादी क्रान्ति के हाथों !!

पूंजीवाद के तमाम जोरो-जुल्म के खिलाफ मजदूर वर्ग एक बार फिर उठ खड़ा होगा!

एक बार फिर लहरायेगा मजदूर क्रान्ति का परचम!

जंग जीतने के लिए सबसे पहले भितरघातियों से छुटकारा पाना होता है!

नकली कम्युनिस्ट, संसदीय वामपन्थी और अर्थवादी ट्रेड्यूनियन नौकरशाह

मजदूर आन्दोलन के भितरघाती हैं, जयचन्द और मीरजाफर हैं !

मजदूर वर्ग को अपना ऐतिहासिक मिशन याद करना होगा !

राजनीतिक सत्ता हासिल करने की लड़ाई छेड़नी होगी !

Library IIAS, Shimla
H 320.531 5 B 488 0
00122532

राहुल फाउण्डेशन

लखनऊ